होलकरहिन्दीग्रन्थमाला नं० ३

इन्दौरराज्यका इतिहास

प्रकाशक

श्रीमध्यभारत-हिन्दी-साहित्य-समिति ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होलकरहिन्दीग्रन्थमाला नं० ३

इन्दौरराज्यका इतिहास

संकलनकर्त्ता
रायबहादुर डाक्टर सरजूप्रसाद त्रिपाठी

प्रकाशक
श्रीमध्यभारत-हिन्दी-साहित्य-समिति,
इन्दौर ।

(सर्वाधिकार प्रकाशकके स्वाधीन)

१९७७

दूसरा संस्करण २०००] [मूल्य ।=)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय-सूची

	विषय			पृष्ठ
१	इन्दौरराज्यका परिचय	...	...	१
२	होलकर राजघरानेका परिचय ; मल्हारराव (प्रथम)	...	...	५
३	मालेराव	...	...	१३
४	अहल्याबाई	...	...	१४.
५	तुकोजीराव (प्रथम)	...	...	२४
६	काशीराव	...	...	२५
७	जसवन्तराव	...	...	२६
८	मल्हारराव (द्वितीय)	...	...	३८
९	मार्तण्डराव	...	...	४३
१०	हरिराव	...	...	४४
११	खण्डेराव	...	...	४८
१२	तुकोजीराव (द्वितीय)	...	...	४९
१३	शिवाजीराव	...	...	६०
१४	वर्तमान महाराज और राज्यप्रबन्ध			६९-८८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वक्तव्य।

प्रत्येक व्यक्तिको अपने देशके इतिहासका सम्यक् ज्ञान होना आवश्यक है। क्योंकि इतिहाससे अनेक प्रकारकी शिक्षा और ज्ञान प्राप्त होता है। वास्तवमें इतिहास शिक्षा और ज्ञानका एक वृहत् भाण्डार है। इन्दौरराज्यका इतिहास बहुत ही महत्वपूर्ण और शिक्षा-प्रद है। इस राज्यके प्रत्येक निवासीको यहाँका इतिहास जानना और उससे लाभ उठाना चाहिए।

बड़े ही आनन्दकी बात है कि होलकरसरकारने राज्यकी पाठशालाओंकी उच्च तथा निम्न कक्षाओंमें शिक्षा पानेवाले विद्यार्थियोंको राज्यको इतिहास सिखाने की आज्ञा प्रचारित कर दी है। किन्तु हिन्दीमें राज्यका अबतकका शृङ्खलाबद्ध इतिहास न होनेसे यहाँकी पाठ-शालाओंमें राज्यके इतिहासकी शिक्षाका कार्य अभीतक आरम्भ नहीं हो सका। इसी अभावको दूर करनेके लिए इस पुस्तकका संकलन किया गया है। इस पुस्तकको महाराजा होलकर्स हिन्दी कमिटीने सहर्ष स्वीकारकर इसे प्रकाशित करनेके लिए हमें होलकर सरकारसे आर्थिक सहायता दिलाई है। इसके लिए हम होलकर सरकारके प्रति भक्तिभावसे अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

रायबहादुर सिरेमल जी बापना, बी० ए०, बी० एस० सी० एल-एल० बी० और रावबहादुर सरदार माधवराव किबे, एम० ए०, एम० आर० ए० एस० ने इस पुस्तकका प्रूफ़ पढ़कर अपनी अमूल्य सम्मतियोंसे पुस्तकको और भी उपयोगी बना दिया है। इस अनुग्रहके लिए हम आप दोनों महोदयोंके कृतज्ञ हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीयुत बालकृष्ण नारायण देवने इस पुस्तककी हस्त-लिखित प्रतिको सुनकर हमें अनेक सम्मतियाँ दी थीं। एतदर्थ हम देव महोदयके कृतज्ञ हैं।

इन्दौरराज्यके भूतपूर्व इंस्पेक्टर आव स्कूल्स और तहसीलदार पं० हरिप्रसादजी चौबेने इस पुस्तकके प्रूफ़-का संशोधन करनेकी कृपा की है। हम इस कृपाके लिए चौबेजीको विनीत भावसे धन्यवाद देते हैं।

इस पुस्तकके लिए इन्दौरके सुप्रसिद्ध फोटोग्राफ़र्स रामचन्द्रराव परतापरावने निस्वार्थ भावसे कितनेही फ़ोटो तैयार कर हमें अनुग्रहीत और बाधित किया।

मन्त्री,

श्रीमध्यभारत-हिन्दी-साहित्य-समिति।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन्दौरराज्यका परिचय।

विस्तार

बालको, हम तुम्हें इन्दौरराज्यका, जिसमें तुम रहते हो, कुछ हाल सुनाते हैं। यह राज्य मध्य-भारतमें है। यह राज्य होलकर-राज्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसका सम्पूर्ण अधिकार महाराजा होलकरके हाथमें है। इस राज्यकी राजधानी इन्दौर नगर है। मध्यभारत और राजस्थानकी अनेक रियासतें महाराजा होलकरको कर देती हैं। होलकर-राज्यका विस्तार ९५१९ वर्गमील है। यह राज्य बहुत फैला हुआ है। इस राज्यके इधर-उधर कितने ही छोटे बड़े दीगर इलाके आ गये हैं।

ज़िले

यह राज्य पाँच ज़िलोंमें बँटा है—(१) इन्दौर (२) महीदपुर, (३) नेमावर, (४) निमाड़ और (५) रामपुरा-भानपुरा।

परगने, गाँव, आबादी, आदि

पुस्तकके अन्तमें दिये हुए नक़शेसे तुम्हें मालूम होगा कि इन ज़िलोंमें २७ परगने हैं, जिनमें ४,२६५ गाँव, क़सबा तथा शहर हैं और आबादी १०,८०,००० है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन्दौरराज्यके तीन प्राकृतिक विभाग हैं—(१) नीची ज़मीन, (२) ऊँची समभूमि और (३) पहाड़ी मुल्क।

प्राकृतिक विभाग

(१) नीची ज़मीन आलमपुर-परगनेकी है।

(२) ऊँची समभूमि रामपुरा-भानपुरा, महीद्पुर और इन्दौर ज़िले की है। यह ज़मीन बहुत उपजाऊ है।

(३) पहाड़ी मुल्क नेमाड़ ज़िला है।

राज्यमें विन्ध्याचल और सतपुड़ाके सिलसिले हैं।

पहाड़

विन्ध्याचल[१] नेमाड़ और नेमावर ज़िलोंमें ख़ूब फैला हुआ है।

सतपुड़ा[२] नर्मदा नदीके दक्षिणसे लेकर नेमाड़के दक्षिणी भागमें फैला हुआ है।

राज्यमें कई नदियाँ बहती हैं। उनमें नर्मदा और चम्बल मुख्य हैं।

नदियां

नर्मदा की गणना भारतकी पवित्र नदियोंमें है। वह अमरकण्टक[३]से निकलकर नेमावर ज़िलेको दक्षिणी

---

(१) विन्ध्याचलकी पहाड़ियोंमें कितने ही क़िलोंके खँडहर अबतक वर्तमान हैं। कुशलगढ़का क़िला सुरक्षित है। रामपुरा-परगनेकी उत्तरवाली पहाड़ीमें हिँगलाजगढ़, इन्द्र-गढ़ और चौरासीगढ़के क़िले, जोकि एक समय दुर्गम थे, इस समय टूटी फूटी हालतमें खड़े हैं।

(२) सतपुड़ाकी पहाड़ियोंमें भी कितने ही क़िले हैं। उनमें बीजागढ़ और सेंधवाके क़िले मुख्य हैं।

(३) अमरकण्टक रीवा-राज्यमें है। यहां अहल्याबाईकी धर्मशाला है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सीमा तथा निमाड़-ज़िलेके उत्तरी भागमें बहती हुई चिखलदा-परगनेकी दक्षिणी सीमामें राज्यसे अलग होती है। नर्मदा इस राज्यमें ११६ मील बहती है। नर्मदाके तटपर इस राज्यके मुख्य स्थान नेमावर, मण्डलेश्वर, महेश्वर और चिखलदा हैं। राज्यमें अनेक छोटी छोटी नदियाँ नर्मदामें मिल गई हैं। उनमें चाँदकेसर और चोरल मुख्य हैं। चाँद-केसरके तटपर काटाफोड़ और चोरलके तटपर बड़वाहा है। बड़वाहेसे कुछ ही दूरपर ओङ्कारेश्वरका प्रसिद्ध मंदिर है।

चम्बल मऊसे नौ मीलपर विन्ध्याचलके जाना-पाव नामक सिलसिलेसे निकली है। यह नदी इन्दौर-ज़िलेके पश्चिमी भागमें बहती हुई और ठीकउत्तरकी ओर सेंधिया-सरकारके राज्यमें होती हुई तथा रामपुरा-भान-पुरा-ज़िलेके बीचसे बहकर उत्तरी सीमामें राज्यसे अलग होती है। राज्यमें, चम्बलमें अनेक नदियाँ भी मिलगई हैं; उनमेंसे क्षिप्रा, गम्भीर, खान, कालीसिन्ध छोटी और कालीसिन्ध बड़ी मुख्य हैं। चम्बलकेकिनारे हासलपुर, क्षिप्राके किनारे महीदपुर, गम्भीरके किनारे मऊ, खानके किनारे इन्दौरनगर और कालीसिन्ध छोटीके किनारे कायथा (तराना-परगना) है।

तालाब

राज्यमें महेश्वर, देपालपुर, हासलपुर, यशवन्तनगर, बिलावली, पीपल्या और शिवपुरके तालाब मुख्य हैं।

वर्षा

राज्यमें वर्षा सब जगह एकसी नहीं होती। मालवेके ज़िलोंमें ३० इञ्च, रामपुरा-भानपुराके पहाड़ी हिस्सेमें २४ इञ्च और पहाड़ी मुल्क, नेमाड़में २० इञ्चका औसत है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जलवायु

इन्दौरराज्यके तीनों प्राकृतिक विभागोंका जलवायु भिन्न भिन्न है। राजनगर और राज्यके बीच-वाले जिलोंका जलवायु मध्यम है। पहाड़ी हिस्सों और नर्मदाके घाटीवाले भागोंमें बहुत अधिक गरमी पड़ती है।

धर्म

राज्यमें साढ़े नौ लाखके लगभग हिन्दू, ८१ हज़ारके लगभग मुसलमान और ईसाई, पारसी आदि कुछ अन्य मतावलम्बी हैं।

भाषा

राज्यमें हिन्दी बोलनेवालोंकी संख्या साढ़े नौ लाखके लगभग, मराठी बोलनेवालोंकी संख्या २६ हज़ारके लगभग, गुजराती बोलनेवालोंकी ३४ हज़ारके लगभग और पञ्जाबी बोलनेवालोंकी संख्या ५ हज़ारके लगभग है।

पेशा

यहाँकी अधिकांश प्रजा खेतीसे गुज़र करती है। व्यापार और नौकरी भी हज़ारों लोगोंकी जीविका है।

उपज

राज्यमें गेहूं, चना, ज्वारि, चावल, बाजरा, मक्का, तुअर, तिल, अलसी और कपास बहुत अधिक परिणाममें पैदा होते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजा मल्हारराव होलकर (प्रथम)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होलकरराजघरानेका परिचय

मल्हारराव (प्रथम)

(सन् १७२८-१७६६)

मालूम होता है कि होलकरराजघरानेके पूर्वज गोकुल (मथुरा) के रहनेवाले थे। उनकी जाति धनगर थी। वे गोकुलसे आकर पहले पहल चित्तौड़में बसे थे, और कई पीढ़ियोंतक वहीं आबाद थे। समयान्तरमें, वे औरङ्गाबाद ज़िलेमें जा बसे। इसके बाद पूनेसे चालीस मीलपर फल्टन-परगनेमें नीरा नदीके किनारे बसे हुए, होलगाँवमें रहने लगे। होलगाँवमें बस जानेहीसे इस वंशका नाम होलकर[1] पड़ा। पहले इस वंशका नाम वीरकर था। इस घरानेकी प्रसिद्धि तथा होलकर-राज्य की जड़ जमानेका यश मल्हारराव[2] को है।

मल्हाररावका जन्म अक्टूबर १६९४ ईसवीमें हुआ था। इनके पिताका नाम खण्डूजी होलकर था। खण्डूजी होलगाँवके चौगुले अर्थात् सहायक पटेल थे। वे खेती आदिसे अपनी गृहस्थी चलाते थे। मल्हारराव उनके एकलौते बेटे थे। वे मल्हाररावको चार-पाँच वर्षकी अनजान अवस्थामें छोड़ परलोकवासी हुए। उनकी मृत्यु हो जानेपर मल्हाररावकी माता भाईबन्दोंके लड़ाई-झगड़ेके कारण मल्हाररावको साथ ले अपने भाई भोजराज बारगल

---

(१) होल = गांव का नाम, कर = निवासी—यथा निम्बालकर, पाटनकर।

(२) मल्हारराव मलीबासे ग्यारहवीं पीढ़ीमें थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के यहाँ चली गई। भोजराज बारगल खानदेशवाले सुलतान-पुर-परगनेके तलौदा गाँवमें रहते थे। वे उस परगनेके एक नामी ज़मीदार थे। उनकी पचीस सवारोंकी एक छोटी सेना मराठा-सरदार कदमबाँडेकी सेवामें तैनात रहती थी। भोजराजने मल्हाररावको शुरू-शुरूमें भेड़-बकरियाँ चरानेका काम सौंपा। कहा जाता है कि मल्हारराव एक दिन जङ्गलमें सो गये। सूर्यकी किरणें उनकी आँखोंपर पड़ रही थीं। यह देख एक सांपने इनके मुखमण्डलपर अपना फन फैला छाया कर दी। यह अनूठा हाल भोजराजके कानोंतक पहुँचा। उन्होंने इनको भाग्यवान् समझ इनसे भेड़-बकरियाँ चरानेका काम लेना बन्द कर दिया। उन्होंने अपनी २५ सवारोंकी सेना में, जो सरदार कदमबाँडेकी सेवामें तैनात रहती थी, इनको भी भरती कर लिया। इन्होंने, फौजमें भरती होने-पर, बहुत जल्द अपनेमें सिपाहियाने गुण सिद्ध कर दिखाये। इन्होंने, एक लड़ाईमें, निज़ाम-उल्-मुल्कके एक सरदारका सिर बड़ी वीरतासे काटा। इस वीरतासे इनका नाम बहुत बढ़ गया। इनके मामा भोजराजने प्रसन्न होकर अपनी लड़की गौतमाबाई[१] का विवाह इनके साथ कर दिया।

---

(१) गौतमाबाईके भाई नारायणको उदयपुरके राणाने बूढ़ा-परगना जागीरमें दिया था। नारायणने उस परगनेका आधा हिस्सा गौतमाबाईको दे दिया था। गौतमाबाईने अपने हिस्सेमें अपने पति मल्हाररावके नामपर मल्हारगढ़ बसाया। नारायणने अपने हिस्सेकी ज़मीनमें नारायणगढ़ बसाया। नारायणका वंश सन् १८२१-२२ में लुप्त होगया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसके कुछ वर्ष बाद, बाजीराव (प्रथम) पेशवा[1] ने इनको सरदार कदमबाँडेसे माँगकर ५०० घुड़-
सन् १७२४ सवारोंका सेनानायक नियत किया। इन्होंने बाँडे वंशके तिकोने और लाल-सफ़ेद धारियोंवाले झंडेको, जोकि अब भी होलकर-सरकारका निशान है, अपनी सेनाका निशान बनाकर सरदार कदमबाँडेके प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

मल्हाररावके पराक्रमका प्रकाश शीघ्रता-पूर्वक चारों ओर छिटकने लगा। इनकी पद-वृद्धि भी
सन् १७२५ जल्दी जल्दी होने लगी। मालवा[2] लेना बाजीरावका पहला उद्देश्य था। जिस समय निज़ाम-उल् मुल्क और उसके भतीजे हमीदखाँके बीच झगड़ा चल-रहा था, बाजीरावने, मल्हारराव, रानोजी सेंधिया और ऊदाजी पँवारको मालवेमें लगान वसूल करनेके लिए आज्ञा और अधिकार दिया। मल्हाररावने ऐसा अच्छा मौका पाकर नर्मदाके आस-पासके स्थानोंपर धावा करना शुरू किया।

सन् १७२८ में मल्हाररावको मालवेमें १२ महाल जागीरमें मिले। सन् १७३१ में मालवेमें ७० महाल और

नारायणगढ़, बूढागाँव तथा बूढ़ा-परगनेका अधिकांश भाग अब भी होलकर-सरकारकी अमलमें है। मल्हारगढ़ और उसके आस-पासकी ज़मीन अब जावरेमें शामिल है

(१) द्वितीय पेशवा; सन् १७२०-४०।
(२) कहावत है—

धरती मालव गहर गँभीर;
मग-मग रोटी पग-पग नीर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिले। साथ ही यह भी मालूम होता है कि पेशवाने अपने अधिकारमें आये हुए मालवेके प्रदेशोंका प्रबन्ध भी इनको सौंप दिया था। पेशवा उस समय ऊदाजी पँवारकी बढ़ती हुई शक्तिको रोकनेका यत्न कर रहा था। मराठोंके विन्ध्याचल पार करनेके पहले ही नेमाड़में, नर्मदाकी घाटीमें, कई परगने मल्हाररावके अधिकारमें आ गये थे। उनमें महेश्वरनगर मुख्य था। महेश्वर ही इनका सदर मुक़ाम गिना जाता था।

सन् १७३२ में, पेशवा बाजीरावने निज़ामकी सलाहसे अपने भाई चिमणाजीआपाकी अधीनतामें एक फ़ौज मालवेपर चढ़ाई करनेके लिए भेजी। मल्हारराव भी इस फ़ौजमें शामिल थे। मालवेके शाही सूबेदार दयाबहादुरको भी मराठोंकी चढ़ाई की ख़बर लग गई। उसने एक बड़ी फ़ौज और तोपें लेकर धारका घाट रोक दिया। सदर रास्ता रुक जानेसे मल्हाररावने नन्दलाल मंडलोई[1] और बड़वानीवालोंकी मददसे एक दूसरे रास्तेसे[2] चढ़ाई की और नर्मदा पारकर सुबह होनेके पहले ही घाटपर चढ़ गये। घाटपर चढ़कर एकबारगी मुग़ल फ़ौजपर टूट पड़े। मराठी-सेनाने मुग़ल-सेनाको ककड़ी की तरह काटा। दयाबहादुर पाँच-छै हज़ार सिपाही जमाकर मुक़ाबलेके लिए निकला। युद्ध हुआ;[3] दया-

---

(१) जूनी इन्दौरके ज़मीदार।

(२) भैरोंघाटसे; इसी रास्तेसे गुजरीसे धारको सड़क निकाली गई है।

(३) धारसे पाँच मीलपर तिरला गाँवमें युद्ध हुआ था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बहादुरके सब सैनिक मारे गये और उसे भी अपने प्राणोंसे हाथ धोना पड़ा। धारमें मराठोंके विजयकी डौंड़ी पिट गई। मल्हारराव धारमें विठोजीबुलेको दो हज़ार सवारोंके सहित रख आगे बढ़े और उज्जैन आ जीतका झण्डा फहराया। उज्जैन लेनेमें कुछ कठिनता न पड़ी। जिस मालवेपर पूरी तौरसे अधिकार करनेके लिए पेशवा वर्षोंसे यत्न कर रहा था वह मल्हाररावके उद्योग, परिश्रम और पराक्रमसे शीघ्र ही हाथ लग गया।

सन् १७३३ में मल्हाररावको फ़ौजके ख़र्चके लिए इन्दौर-परगना मिला।

सन् १७३६ में मल्हारराव पेशवाके साथ दिल्ली गये और दिल्लीके पास ही बहुत सी मुग़ल-सेनाको परास्त किया।

सन् १७३७ में निज़ामने मुग़ल-बादशाह मुहम्मदशाह[१] की ओरसे मालवा छीननेके लिए पेशवापर चढ़ाई की। सन् १७३९ में भोपालमें पेशवाने मल्हाररावकी विशेष सहायतासे निज़ामको लड़ाईके मैदानसे मार भगाया। निज़ामने युद्धमें हारकर सुलह कर ली और मुग़ल-बादशाहसे पेशवाको मालवे तथा नर्मदा और चम्बलके बीचवाले प्रदेशपर अधिकार करनेकी सनद भी दिला दी।

जयपुरके महाराज सवाई जयसिंहने मालवेमें पेशवा-का अधिकार सुदृढ़ बनानेमें विशेष सहायता दी थी।

---

(१) मुहम्मदशाहने सन् १७१८ से १७४८ तक दिल्ली की बादशाहत की थी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनकी मृत्यु (सन् १७४३) हो जाने पर, उनके जेठे पुत्र ईश्वरीसिंह गद्दीपर बैठे किन्तु गद्दीपर हक़ छोटे लड़के माधवसिंहका था। कारण, माधवसिंह उदयपुरकी राजकुमारीके पुत्र थे। सवाई जयसिंहका विवाह उदयपुरकी राजकुमारीके साथ इस शर्तपर हुआ था कि वह सब रानियोंसे बड़ी समझी जाय और उसके पुत्रको, छोटे-बड़ेके विचारके बिना, जयपुरकी गद्दी दी जाय। ईश्वरीसिंहको गद्दी मिलनेपर माधवसिंह और उनके मामा राणा जगतसिंहने मल्हाररावको लड़ाईमें मदद देनेके लिए बुलाया। किन्तु मल्हाररावके मदद देनेकी ख़बर पातेही ईश्वरीसिंहने (७ वर्षके शासनके बाद) विष खाकर आत्म-हत्या कर ली। माधवसिंह जयपुरकी गद्दीपर बैठे। मल्हाररावको इस सहायताके बदले ६४ लाख रुपये नक़द तथा टोंक और रामपुरा-भानपुरा ज़िले प्राप्त हुए।

सन् १७५१ मुग़ल-बादशाह अहमदशाह[1] के राज्यकालमें, जिस समय रुहेले अवध लेनेके लिए चढ़ आये, उस समय वज़ीर सफ़दरजंगने रक्षाके लिए मराठोंको बुलाया। मल्हारराव भी मराठी-सेनामें सम्मिलित हुए। इन्होंने बड़ी युक्तिके साथ रातके वक़्त रुहेलोंपर चढ़ाई की और उन्हें मार भगाया। अहमदशाहने इनकी वीरता, साहस और युक्तिपर प्रसन्न होकर चाँदवड़की मालगुज़ारी में इनका १२॥) सैकड़ा हिस्सा (सरदेशमुखी) कर दिया और देशमुखकी पदवी दी। होलकर राजवंशके अधिकारमें

---

(१) अहमदशाह सन् १७४८ में दिल्लीके तख़्तपर बैठा था।

चाँदवड़की सरदेशमुखी ही एकमात्र शाही इनाम है। पेशवा[1] ने इन्हें सूबेदारकी पदवी दी।

सन् १७५४ में कुम्भेर[2] के क़िलेके घेरेमें इनके एकलौते बेटे खण्डेराव मारे गये। खण्डेरावकी छतरी भरतपुर-राज्यमें अबतक मौजूद है।

सन् १७६० में, अबदालियोंने, मल्हाररावको पकड़ने के लिए एक सेना भेजी। उस सेनासे मल्हाररावकी मुठभेड़ हो गई। इनके साथके सिपाही मारे गये। तथापि ये पकड़े न जा सके।

पानीपतकी लड़ाईमें पहले मल्हारराव भी शामिल हुए पर पीछे अपनी सेना समरभूमिसे हटा
सन् १७६१
ली। कहा जाता है कि इसका कारण मराठा-सेनापति सदाशिवराव भाऊकी गुस्ताख़ी थी। होलकरने जब दो दिनके लिए लड़ाई बन्द रखनेकी सलाह दी उस समय भाऊ ने कहा—, "बकरियां चरानेवालेकी सलाह कौन चाहता है!" मल्हाररावने ऐसे सेनानायकके लिए, जो प्रतिष्ठा और सेवाका लिहाज़ नहीं करता, अपने सिपाहियोंको युद्धकी धधकती आगमें स्वाहा करना उचित न समझा। ये पानीपतकी लड़ाईसे अलग हो अपनी

(१) बालाजी बाजीराव (सन् १७४०-६१)

(२) कुम्भेर, भरतपुर और डीगके बीचमें है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अमलदारियों[1] और प्रबन्धोंको सुदृढ़ बनानेका उपाय करने लगे।

ये राक्षसभुवन[2] या टेंडुलजाकी लड़ाईमें भी शामिल हुए थे। इस युद्धमें भाग लेनेके कारण इनको ३० लाख की जागीर मिली थी।

सन् १७६६ की २० वीं मईको, आलमपुर[3] में, कर्ण-रोग से, इनका देहान्त हो गया। वहाँ इनकी छतरी अबतक मौजूद है।

मल्हारराव, एक मामूली किसानके घरमें जन्म लेकर अपने बाहुबल, उद्योग, परिश्रम एवं बुद्धिमानीसे बड़ी बड़ी अमलदारियोंके मालिक बन गये। दक्खिन[4] के कई बड़े बड़े इलाके, खानदेशकी एक बड़ी ज़मीदारी, नर्मदाकी घाटीका जंगल और आबादियाँ, सतपुड़ा-पहाड़ियोंके जंगलों और विन्धाचलकी बीहड़ ढालों और समथल मैदानोंपर खड़े क़िले और मालवेमें दूर दूर तक फैले हुए प्रदेश इनके अधिकारमें थे। इनको

(१) पेशवाने मल्हाररावको मालवेमें ४० लाख और दक्खिनमें २० लाख सालाना आमदनीकी जागीरें दी थीं। मल्हाररावकी सेनामें केवल सवारोंकी संख्या १५ हज़ार थी।

(२) यह गांव औरङ्गाबाद ज़िलेके पैठण तालुकेमें है।

(३) आलमपुर बुन्देलखण्डमें है। यह परगना होलकर-राजघरानेको मल्हाररावकी छतरी के लिए मिला है।

(४) इतिहास लेखक भारत को तीन भागोंमें बांटते हैं—(१) आर्यावर्त या हिन्दुस्तान (नर्मदाके उत्तरवाले प्रदेश) (२) दक्खिन (ताप्ती और तुङ्गभद्राके बीचवाले प्रदेश) और (३) दूर दक्षिण (तुङ्गभद्रासे कुमारी अन्तरीप तकके प्रदेश)।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

5 लाखकी सालाना आमदनी होती थी।
। बड़ी इज्ज़त करता था।

शुरू-शुरूमें एक मामूली सिपाहीकी तरह अपने दि ताये थे। इनकी अमलदारियोंका प्रबन्ध दृढ़ और बुद्धिमत्ता-पूर्ण था। ये पूर्ण-वीर[1] थे। इनका पराक्रम देखकर लोगोंके छक्के छूट जाते थे। इनका साहस बेजोड़ था। इनकी उदारता और गुणग्राहकता लोक-प्रसिद्ध थी। जिस समय ये किसी सिपाहीपर, उसकी वीरताके कारण प्रसन्न हो जाते थे, उस समय हुक्म देते थे,—'देखो, इसकी ढाल रुपयोंसे भर दो।' ये मराठोंका काम तन-मन-धनसे करते थे। ये जिस कामेके करनेका इरादा अपने दिलमें पक्का कर लेते थे, उसे पूरा करनेमें कोई बात उठा न रखते थे। इनकी रहन-सहन बहुत ही सादी थी। ये अपनी बातके सच्चे थे। चापलूसी इनको पसन्द न थी। राजपूत इनका आदर करते थे। ये अपने सम्बन्धियोंके साथ प्रेम और दयाका बर्ताव करते थे।

मालेराव।

(सन् १७६६-६७)

मल्हाररावके खण्डेरावको छोड़कर और कोई पुत्र न था। खण्डेराव डीगके पास कुम्भेरके क़िलेके घेरेमें पहले ही मारे जा चुके थे। किन्तु खण्डेरावके उनकी

(१) वीर चारप्रकारके होते हैं—रणवीर, दानवीर धर्मवीर और कर्मवीर।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धर्मपत्नी अहल्याबाईसे, दो सन्तान थीं—एक पुत्र और एक पुत्री। पुत्रका नाम मालेराव और पुत्रीका नाम मुक्ताबाई [१] था।

माल्हारावकी मृत्यु हो जानेपर मालेराव उत्तराधिकारी हुए। परन्तु उत्तराधिकार पानेके नौ महीने बाद ही मस्तिष्क-रोगसे इनकी मृत्यु हो गई।

अहल्याबाई[२]।

(सन् १७६६-९५)

मालेरावकी मृत्यु हो जानेपर मल्हाररावके दीवान, गङ्गाधर-यशवन्तने अहल्याबाईको अपने कुलके किसी

---

(१) मुक्ताबाईका विवाह यशवन्तराव फनसेके साथ हुआ था। मुक्ताबाईके एक पुत्र था। पुत्रकी अकस्मात् मृत्यु हो गई। पुत्र-मृत्युके कुछ महीने बाद यशवन्तराव फनसेने भी संसारसे नाता तोड़ दिया। पतिकी मृत्यु हो जानेपर, मुक्ताबाई सती होनेके लिए तैयार हुईं। अहल्याबाईने उनको बहुत कुछ प्रबोध दिया; परन्तु उनका सती होनेका इरादा न बदला। अन्तमें मुक्ताबाई पतिकी जलती चितापर बैठकर सती हो गईं। इस घटनासे अहल्याबाईको विशेष शोक हुआ इन्होंने तीन दिनतक भोजन नहीं किया। यह घटना अहल्याबाईके राजकालमें हुई थी। फनसेकी छतरी महेश्वरमें अबतक है।

(२) योगीन्द्रनाथ बसु बी० ए० ने बङ्गभाषामें अहल्याबाईका जीवन-चरित लिखा है। बसुमहाशयने उस पुस्तकमें अहल्याबाईका जन्मकाल सन् १७३५ लिखा है। सम्भवतः उन्होंने जनरल मालकमके "मेमायर आफ सेण्ट्रल इण्डिया"

देवी श्रीअहल्याबाई होलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लड़केको गोद लेनेकी सलाह दी। पर जब अहल्याबाईने उसकी सलाहपर कान नहीं दिया, तब उसने राघोबा-दादाको अपनी ओर मिलाया। उसने राघोबादादासे कहा कि यदि उसके प्रयत्नसे अहल्याबाई गोद ले लेंगी तो वह उसको एक बड़ी रक़म नज़र करेगा। रुपयेकी लालचसे, राघोबादादाने गोद लेनेके लिए अहल्याबाईपर दबाव डाला। किन्तु जब अहल्याबाईने गोद लेना क़बूल नहीं किया तब उसने लड़ाईकी तैयारी की। अहल्याबाईने भी लड़ाईकी तैयारीके लिए अपनी सेनाको आज्ञा दी तथा रणभूमिमें खुद जानेकी भी तैयारी की। साथही राघोबा-दादाको इस मर्मका सन्देसा कहला भेजा कि तुमको एक स्त्री के साथ युद्ध न करना चाहिए; यदि इस युद्धमें तुम्हारी जीत भी हो जाय तोभी इससे तुमको यश नहीं मिल सकता; यदि तुम्हारी हार हुई, तो सच जानो तुम संसारमें मुँह ऊँचा रखने लायक़ न रहोगे। राघोबा-दादाकी सेना भी उसके इस कामसे अप्रसन्न थी। युद्ध करनेके लिए सेंधिया और भोंसलेकी भी सम्मति न थी। फिर भी; लड़ाई शुरू होनेके पहले राघोबादादाके पास पेशवा[1] का एक पत्र आ पहुँचा,

का अनुकरण किया है। "देवी श्री अहल्याबाई" नामक मराठी-ग्रन्थके लेखक पुरुषोत्तम महाशयने अनेक प्रमाणोंसे अहल्याबाईका जन्मकाल सन् १७२५-२६ सिद्ध किया है। पुरुषोत्तम महाशयका युक्तिवाद सर्वथा मान्य है। अहल्या-बाईका जन्म सेंधिया-कुलमें हुआ था।

(१) माधवराव (सन् १७६१-७२)।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जिसमें पेशवाने राघोवादादाको अहल्याबाईसे युद्ध न करनेकी ताक़ीद की थी। इससे लड़ाईकी आग नहीं भड़कने पाई।

अहल्याबाई होलकर-राज्यकी उत्तराधिकारिणी हुई। इन्होंने महेश्वरको अपना राजनगर नियत किया; तुकोजीराव होलकरको सेनानायक बनाया।

तुकोजीरावने मल्हाररावकी सेनामें रहकर वीरता और साहसके बड़े बड़े काम किये थे। ये सादी चालके सिपाही थे। ऐसा ऊँचा ओहदा पानेपर भी, उनकी चाल-ढालमें कोई अन्तर न पड़ सका।

अहल्याबाईके उत्तराधिकारिणी होनेके बाद जल्दी ही राघोवादादाको पूना जानेकी जरूरत पड़ी। अहल्याबाईने उस समय गई-गुज़री बातोंका कुछ भी ख़याल न कर, राघोवादादाको महेश्वर होकर जानेका निमन्त्रण दिया। राघोवादादा महेश्वर आया। अहल्याबाईने उसकी बड़ी ख़ातिर की। राघोवाने, महेश्वरमें कई दिन ठहरने के बाद, पूनेके लिए कूच किया। तुकोजीराव भी उसके साथ पूने गये। वहाँ तुकोजीरावने पेशवाको १५,६२००० रुपये भेंट किये। पेशवाने उनको ख़िलअत और उनके उच्च पदकी मंजूरी दी।

तुकोजीराव अहल्याबाईकी बड़ी इज़्ज़त करते थे। वे मामूली नौकरोंकी तरह इनकी ताबेदारी किया करते थे। वे इनको सदा 'माँ' कहा करते थे। तुकोजीराव उमरमें अहल्याबाईसे बड़े थे। इसलिए अहल्याबाईने उनकी मुहरमें 'मल्हारराव सुत तुकोजी' खुदवा दिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तुकोजीराव सदा अहल्याबाईके आज्ञानुसार काम किया करते थे। वे ऐसे कामोंमें कभी हाथ न डालते थे, जिससे अहल्याबाई उनपर नाराज़ हो सकें। इनके ज़िम्मे पेशवाका आज्ञापालन करना और ख़ासकर फ़ौजका काम था। जिस समय वे दक्खिनमें रहते थे, उस समय सतपुड़ा-पहाड़ियोंके दक्षिणवाले प्रदेशोंकी मालगुज़ारी भी वसूल करते थे। जिस समय वे हिन्दुस्तान[1] में रहते थे उस समय उस ओरकी और बुन्देलखण्डवाली अमलदारियोंकी मालगुज़ारी और राजस्थानसे कर वसूल करते थे। मालवेके ज़िलोंका प्रबन्ध अहल्याबाई स्वयं करती थीं।

अहल्याबाईके प्रतिनिधि हैदराबाद, श्रीरङ्गपट्टन, नागपुर, लखनऊ, और कलकत्तेमें रहते थे। अनेक राजदरबारोंमें वकील तैनात थे। उन राजदरबारोंके वकील इनके दरबारमें रहते थे। ये राज्यप्रबन्धका कार्य नियमित रीतिसे करती थीं। ये ख़ुद राजदरबारमें बैठतीं, अर्ज़ियाँ सुनतीं और उनपर उचित आज्ञा देती थीं। ये राज्यप्रबन्धके हर एक महकमेका काम देखती थीं, जमाख़र्चका हिसाब बहुत सही बनाया जाता था। मालगुज़ारी और कर आदिसे जो रुपया आता था, वह राजप्रबन्धके ज़रूरी ख़र्चोंके बाद जमा किया जाता था। इनके निजके ख़र्चके लिए चार ज़िले मुक़र्रर थे, जिनसे सालमें चार लाखसे अधिक आमदनी होती थी। ये प्रजापर बहुत हलका कर क़ायम करतीं और उनके हक़ोंका

(१) देखो फ़ुटनोट पृष्ठ १२।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पूरा ध्यान रखती थीं। काम करनेसे इनकी तबीअत ज़रा भी न ऊबती थी। इंसाफ़में ये कभी तरफ़दारी न करती थीं। सारांशमें, प्रजासे इनको बहुत प्रेम था। ये प्रजाको पुत्रके समान समझतीं तथा उसको सुखी बनानेका भरसक यत्न करती थीं। ऊँच-नीच सब जाति के लोग इनके आगे अपना दुःखड़ा दिल खोलकर रो सकते थे। ये प्रजा-हितको अपना मुख्य कर्तव्य समझती थीं। कभी किसीपर विशेष क्रुद्ध न होती थीं और जहाँतक हो सकता था, कठोर शिक्षा नहीं देती थीं। जिस समय इनके सलाकार इनको कठोर शिक्षा देनेकी सलाह देते उस समय ये कहती थीं "जिस समय ईश्वर के बनाये प्राणीका प्राण लेना हो, उस समय हम मनुष्योंको आगे पीछे खूब सोच विचार लेना चाहिए। परलोकमें हर एक बातका जवाब देना होगा।"

महादाजी सेंधिया और अहल्याबाईसे बहुत मेल था। अहल्याबाईने तीस लाख रुपये उनको कर्ज़ भी दिये थे।

अहल्याबाई नित्य दो घड़ी रात बाक़ी रहते उठती थीं। ज़रूरी कामोंसे फ़ारिग़ हो स्नान करतीं। अनन्तर पूजा-पाठमें लग जातीं। पूजा-पाठ पूरा कर पुराण सुनतीं। पश्चात् दानपुण्य करतीं और भूखे ब्राह्मणोंको खाना खिलातीं। फिर आप भोजन करने बैठतीं। भोजनके पीछे ज़रा विश्राम करतीं। दो बजे दोपहरसे राज्यप्रबन्धके कामोंमें लगतीं और बराबर सन्ध्या समय

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छः बजे तक लगी रहतीं। इसके बाद पूजा-पाठ कर भोजन करतीं। नौ बजे रात फिर दरबारमें बैठतीं और ११ बजे रात तक राजकाज करती थीं।

अहल्याबाई दयाधर्मकी साक्षात् मूर्त्ति थीं। इन्होंने बदरीनारायणमें एक धर्मशाला बनवाई और कुण्ड खुदवाया। रामेश्वर, अमरकण्टक और केदारनाथ में धर्मशालायें बनवाईं। द्वारका, जगन्नाथपुरी, ओंकारेश्वर, उज्जैन आदिमें अन्नसत्र और सदावर्त खोले। प्रयाग, गया[1], अयोध्या, हरिद्वार, हृषीकेश, पंढरपुर, इलोरा[2] चाङ्गदेव[3] (भुसावल—बम्बई प्रान्त) सुल्तानपुर[4]

---

(१) गयाके मन्दिर (विष्णुपाद) में राम और सीताकी मूर्त्तियोंके पास शिवार्चनमें तत्पर अहल्याबाईकी भी मूर्त्ति है। अहल्याबाई नित्य शिवकी पूजा करती थीं। राज्यकी ओरसे इनके नामपर अब भी लिङ्गार्चन होता है। कहा जाता है कि इन्होंने अपनी तीन मूर्त्तियां बनवाई थीं। उनमें से एक वही है जो गयाके मन्दिरमें है। दूसरी महेश्वरमें, शिवमन्दिरमें, है इनके आज्ञानुसार इनकी मृत्युके बाद इनकी वह मूर्त्ति शिव-मूर्त्तिके पीछे रख दी गई है। इनकी तीसरी मूर्त्तिका ठीक पता नहीं चलता। नासिकके मन्दिर में भी इनकी मूर्त्ति है। सम्भव है, कि तीसरी मूर्त्ति वही हो।

(२) इलोरामें लाल पत्थरका बढ़िया मन्दिर है।

(३) चाङ्गदेवमें अहल्याबाईने एक मन्दिर बनवाया था। उसका ऊपरी हिस्सा सन् १८३७ की बाढ़में बह गया है। निचला हिस्सा अबतक वर्तमान है।

(४) यहां मन्दिर है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नासिक, पुनतम्बा[१], जेजुरी, इन्दौर, महेश्वर, जाम[२] आदिमें घाट और मन्दिर बनवाये। सोमनाथ[३] के प्रसिद्ध मन्दिरकी मरम्मत कराई। काशीमें विश्वनाथका मन्दिर बनवाया। कितने ही जगह यात्रियोंकी सुविधाके लिए कुण्ड वा कूप खुदवाये[४]।

---

(१) पुनतम्बामें, अहल्याबाईका बनवाया गोदावरीका घाट है।

(२) जाम विन्धाचलके सिलसिलेमें है।

(३) सोमानाथका मन्दिर जूनागढ़-राज्य (कठियावाड़) में है। इस मन्दिरको ग़ज़नीवाले महमूदने सन् १०२४ में नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था।

(४) अहल्याबाईने भारतके प्रायः सभी पुण्यक्षेत्रोंमें मन्दिर और धर्मशालायें बनवाई हैं। किन्तु खेद है कि उनकी समस्त धर्मशालाओं और मन्दिरोंका ठीक पता नहीं चलता। तो भी अहल्याबाईके प्रतापसे होलकर-सरकारके वर्तमान समयमें १२६७३ धार्मिक स्थान हैं। राज्यसे बाहर बम्बईप्रान्तमें—पंढरपुर, जेजुरी, पूना, नासिक गोकर्णमें, मद्रासप्रान्तमें—रामेश्वरमें, निज़ाम-राज्यमें-और चोड़ीमें, मध्यप्रदेशमें— ओङ्कारेश्वर में, मध्य-भारतमें—इन्दौर-राज्य, उज्जैन और रीवा-राज्यमें—राजस्थानमें—पुष्कर, भरतपुर और नाथद्वारेमें, संयुक्तप्रान्त में—प्रयाग, काशी, वृन्दावन, अयोध्या, सम्बलगांव, हरिद्वार, हृषीकेश, बदरीनारायण बन्दरचट्टी और चोपर--चट्टीमें—धर्मशाला, मन्दिर, कुंए, कुण्ड आदि धार्मिक चिन्ह हैं। राज्यके भीतर इन्दौर नगर, महेश्वर, भानपुरा (छतरी) आलमपुर (छतरी) ब्राह्मणगांव, चिखलदा, दाही-

Ac. Gunratnasuri MS		Jin Gun Aradhak Trust

जिन लोगोंने महेश्वरमें इनके रहनेका छोटा मामूली घर और तीर्थोंमें बनी इनकी विशाल धर्मशालायें देखी हैं, वे इनकी धार्मिकताका अनुमान सहज ही कर सकते हैं। ये धर्मशालाओं और मन्दिरोंके खर्चके लिए बराबर रुपये भेजा करती थीं। हर साल गर्मीके दिनोंमें प्याससे तड़पते हुए राहगीरोंको पानी पिलानेके लिए जगह जगह पौसरेका इन्तज़ाम करती थीं। शीतकालमें शीतसे ठिठुरते हुए दीन-दुःखियोंको वस्त्र दिया करती थीं। मनुष्यमात्रपर ही नहीं प्राणी मात्रपर इनकी दयाका स्रोत समान रूपसे प्रवाहित होता था। चिड़ियोंके चुगनेके लिए कितनेही खेतोंमें अनाज बोया जाता था। कितने ही आदमी खेतोंमें जुते हुए प्यासे बैलोंको पानी पिलानेके लिए मुक़र्रर थे। कहा जाता है कि बद्रीनारायणके पथमें इन्होंने गायोंके चरनेके लिए एक मैदान मोल लिया था। वह गोचरके नामसे प्रसिद्ध

कटेरखेड़ा, फ़तहगढ़-संगम, निपोगड़ारिया. धर्म-राजेश्वर (चन्दवासा) में और राज्यसे बाहर बम्बई प्रान्तमें—गोकर्ण, पंढरपुर, जेजुरी और राजापुरमें, निज़ाम राज्यमें—चोंडीमें, मध्यप्रदेशमें—ओंकारेश्वरमें, राजस्थानमें—पुष्करमें, संयुक्त-प्रदेशमें—काशी, हरिद्वार, बदरीनारायण, गंगोत्री, कादेरेश्वर, विष्णुप्रयाग, देवप्रयाग, बन्दरचट्टी, हृषीकेष और वृन्दावनमें सदावर्त हैं। इन्दौर, महेश्वर; उज्जैन, पुष्कर, काशी, प्रयाग, गोकर्ण, पंढरपुर, जेजुरी, रामेश्वर और ओंकारेश्वरमें अन्नसत्र हैं। इन सबके ख़र्चके लिए कोई दो लाख सालाना आमदनीके ७८ गांव, कोई एक लाख बीघा ज़मीन और लगभग दो लाख रुपया नक़द लगा है। इन सबका बन्दोबस्त ख़ासगीके द्वारा श्रीमन्त महारानी साहेबा करती हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। उसमें अब भी गायें चरती हैं। यह इनके धार्मिक जीवनका ही प्रभाव था कि निज़ाम और टीपू भी इनको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। ये सब धर्मके लोगोंको समान दृष्टिसे देखती थीं। मुसल्मान और हिन्दू दोनों इनके दीर्घजीवनके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करते थे

अहल्याबाईने अनेक प्रसिद्ध तीर्थों[1] का दर्शन और अनेक पवित्र नदियों[2] में स्नान किया था।

इनके विस्तृत राज्यका प्रबन्ध सुदृढ़ और प्रशंसनीय था। मल्हारराव जब दूरवर्त्ती स्थानोंको जाते थे तब राज्यप्रबन्धका काम इनको ही सौंप जाते थे। इससे राजकाजमें इन्होंने विशेष कुशलता, उत्तराधिकारिणी होनेके पहले ही, प्राप्त करली थी। इनके राज्यकालमें प्रजा के दिन बड़ी ही सुख-शान्तिसे कटे। कहीं बलवा और लूट नहीं हुई। इनके राज्यमें आक्रमण करनेका किसीको साहस न हुआ। अलबत्ता चन्द्रावतोंने सन् १७७१ (उदयपुरके राना अरिसिंह[3] की सहायतासे) और सन् १७८७

---

(१) आलन्दी, देहू, पंढरपुर, कोल्हापुर, रामेश्वर, डाकोर, द्वारका, गया काशी, प्रयाग, बदरी-केदारनाथ, अयोध्या, मथुरा, वृन्द्रावन, गंगोत्री, पुरी आदि।

(२) गंगा, यमुना, नर्मदा, तापती, कावेरी, कृष्णा, तुङ्गभद्रा, आदि।

(३) कितने ही ग्रन्थोंमें, 'अलसी' नाम लिखा मिलता है। टाड साहबने 'अरसी' नाम लिखा है। "इम्पीरियल गैजेटियर" (जिल्द २४ सफ़ा ८१) में 'अरिसिंह' नाम दिया गया है जो ठीक जँचता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

में रामपुरे पर अधिकार करना चाहा था, किन्तु उनका प्रयत्न विफल हुआ।

इन्दौरको अहल्याबाईने गाँवसे नगरका रूप दिया।

१३ अगस्त १७९५ ईसवीको अहल्याबाईने परलोककी यात्रा की। महेश्वरमें इनकी दर्शनीय छतरी है। अपनी छतरी इन्होंने अपने जीवन-कालहीमें तैयार करा ली थी।[1]

अहल्याबाईका क़द मझोला था। इनका शरीर-वर्ण गेहुंआ था। ये तेजस्विनी देख पड़ती थीं। ये संस्कृत जानतीं और स्वयं भी पुराण पढ़ती थीं।

अहल्याबाईका चरित्र अत्यन्त अलौकिक था। विस्तृत और शक्तिशाली राज्यकी अधिकारिणी होनेपर भी इनमें अभिमानका लेश न था। ये बड़ी ही धर्मात्मा थीं। ये सदा ऐसी बातें सोचतीं रहती थीं जिनसे इनकी प्रजा को सुख नसीब हो सके। इनका आचार बहुत ही पवित्र था। ये दूसरोंके दोष और दुर्बलताके लिए क्षमा धारण करती थीं। चापलूसी इनको ज़रा भी पसन्द न थी।

---

(१) राज्यमें अहल्याबाईके निजके बनवाये कितने ही स्मृति-चिन्ह हैं। यथा इन्दौरका मन्दिर, तरानेमें तिल-भण्डारेश्वरका मन्दिर, ब्राह्मणगांव (ज़िला नेमाड़) में सुखानन्द और सुखेश्वर महादेवके मन्दिर, देवगुड़ारिया (इन्दौर-परगना) में श्रीगुटकेश्वर महादेवका मन्दिर, चोली (महेश्वर-परगना) में मल्हाररावकी पत्नी गौतमाबाईके बनवाये गौरीसोमनाथके मन्दिरके सामनेका सभामण्डप, जामघाट, जामघाटके नीचेवाला तालाब, भीकनगांवकी बावड़ी इत्यादि इत्यादि।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस समय भारतमें रेलके कारण दुर्गम यात्रा भी सुगम हो गई है। परन्तु १८ वीं शताब्दीमें, जब भारतमें लोग रेलका नाम तक न जानते थे, पथ सब दुर्गम बन रहे थे, डाँका और लूटकी खूब भरमार थी, दूर २ की यात्रा करना बड़ा ही कठिन और भयावह था, ऐसे समयमें भारतके प्रसिद्ध प्रसिद्ध तीर्थोंका दर्शन करना, प्रायः सभी पुण्य नदियोंमें स्नान करना, जगह जगह धर्मशालायें, कुँएँ, बावड़ी आदि बनवाना तथा अन्नसत्र और सदावर्त खोलना, उनके खर्चके लिए बराबर रुपये भेजते रहना आदि कार्योंसे तथा अन्य चरित्रोंसे अहल्याबाईके हृदय की गम्भीर धर्मनिष्ठा, ईश्वरभक्ति, दृढ़ता, वीरता, प्रजाप्रेम, सुप्रबन्ध, आदि अनेक सद्गुणोंका परिचय प्राप्त होता है।

तुकोजीराव (प्रथम)

(१७९५-९७)

अहल्याबाईकी मृत्यु हो जाने पर तुकोजीराव गद्दी पर बैठे। केवल दो वर्षके शासनके बाद ही इन्होंने संसारसे कूच किया।

तुकोजीराव बड़ेही साहसी और वीर थे। अहल्याबाईके शासनकालमें इन्होंने पेशवाकी सेनामें सम्मिलित हो कितनी ही लड़ाइयाँ लड़ी थीं। इनके जीवनका अधिकांश भाग लड़ाईके मैदानोंहीमें बीता था। इन्होंने अहल्याबाईके राजकालमें (सन् १७९२ में) यूरोपियन ढंग की सेना तैयार की थी और उसे ड्यूडरनेक नामक फ्रेञ्च

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

प्रिंस यशवन्तराव होलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अफ़सरकी अधीनतामें रक्खी थी। इनके शासन-समयमें होलकर-राजवंशकी अमलदारियोंकी दशा बहुत अच्छी थी। प्रजाके दिन हँसी-खुशी और शान्तिमें कटे।

काशीराव

(१७९७-९८)

तुकोजीरावकी मृत्यु होते ही होलकर-राज्य का चमकीला सितारा धुँधला पड़ गया। राज्यकी दशा बिगड़ गई; सर्वत्र अराजकता फैल गई। कारण, इनके लड़कोंमें गद्दीके लिए फूटकी आग पहलेहीसे भभक रही थी।

तुकोजीरावके चार लड़के थे। दो धर्मपत्नीसे और दो उपपत्नीसे। धर्मपत्नीके पुत्रोंका नाम काशीराव और मल्हार-राव था। उपपत्नीके पुत्रोंका नाम जसवन्तराव (यशवन्त-राव) और विठोजी था। मल्हारराव काशीरावकी अपेक्षा अधिक होनहार मालूम होते थे। तुकोजीराव और अहल्याबाई की इच्छा थी कि काशीराव महेश्वरमें रहें तथा राजकाज करें और मल्हारराव सेना और राज्यप्रबन्धका काम करें। इससे एकको महाराज और दूसरेको राजकीय-शक्ति-सम्पन्न बनानेकी मंशा थी। सन् १७९६ में तुकोजीरावने काशीरावको अपना उत्तराधिकारी स्वीकारकर ख़िलअ़त भी दे दी। इसके बाद जल्दी ही तुकोजीरावकी मृत्यु हो जानेपर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

काशीराव और मल्हाररावके बीच गद्दीके लिए झगड़ा खड़ा हुआ। मल्हाररावने पूनेमें नाना फड़नवीस[१] से मदद चाही। नाना फड़नवीसने मदद देनेका वादा भी किया। काशीराव, जो इस समय महेश्वरमें थे, सरजेराव घाटगे[२] के द्वारा दौलतराव सेंधियासे मदद माँगी। सेंधियाने मदद देना क़बूल किया। जब काशीराव पूने गये, तब सेंधियाने उनकी तरफ़दारी प्रकाश्यरूपसे की। मल्हारराव कहीं भग न जायँ इस ख़यालसे दोनोंके बीच कृत्रिम मेल करा दिया गया। जिस दिन मेल-मिलाप हुआ उसी दिन रातको सेंधियाने मल्हाररावकी छावनी घेर ली। युद्ध हुआ; मल्हारराव मारे गये और उनका लड़का खण्डेराव सेंधियाके हाथ पड़ गया। काशीरावने सेंधियाको इस कर्मके पुरस्कारमें दस लाख रुपये नक़द दिये; पाँच लाखकी वसूलीके लिए अम्बर-परगना गिरवी रख दिया। केवल येही नहीं, महादाजी सेंधियाने अहल्याबाई और हरखाबाई[३] को जो टीपें लिख दी थीं, उन्हें वापस कर दिया[४]।

---

(१) फड़नवीस उर्दू लफ़्ज़ फर्दनवीस का अपभ्रंश है। फड़नवीस का अर्थ अर्थसचिव है।

(२) सेंधियाका मन्त्री।

(३) मल्हाररावकी खांडारानी।

(४) लड़ाईमें जो गोला-बारूद ख़र्च हुआ था, उसकी एवज़में सेंधियाने पन्द्रह लाख रुपये नक़द मांगा था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जसवन्तराव पनाहके लिए नागपुर और विठोजी[1] कोल्हापुर भाग गये। रघुजी भोंसले (नागपुरका राज्य धिकारी) ने सेंधियाको प्रसन्न करनेकी नियतसे जसवन्तराव को पकड़ लिया। जसवन्तराव छः महीने तक नागपुरमें नज़रबन्द रहे। अनन्तर वहाँसे चल खड़े हुए। परन्तु पुनः पकड़े गये। कुछ समय बाद ये फिर चल निकले। ये ख़ानदेश जा पहुँचे। इनके साथ मुहम्मदशाह नामका एक मुसलमान और भवानीशङ्कर नामक एक हिन्दू था। यहीं गुरगाँवखेड़ेमें इनके शिक्षागुरु चिमन-भाऊ रहते थे। चिमनभाऊने इनको एक घोड़ी[2] और तीन सौ रुपये नक़द देकर मालवे जानेकी सलाह दी। ये वहाँसे कुकरनालाके छोटे क़िलेमें पहुँचे और उसके मालिक भील-सरदारके दो-तीन मासतक मिहमान रहे। ये कुकरनालासे बड़वानी और वहाँसे धार गये।

ये दो तीन महीने धारमें रहे। वहां होलकर-राजघरानेके कुछ पुराने नौकर भी इनकी सेवामें आ गये। किन्तु उन लोगोंकी हालत अच्छी न थी। इसी समय धारके भूतपूर्व दीवान रङ्गराव आलेकरने पठानों और पिण्डारियोंकी एक सेना बटोरकर धारके

---

(१) सन् १८०१ के अप्रैल महीनोमें पेशवाकी एक सेना ने विठोजीको लुटेरोंके एक दलमें पकड़ लिया। पेशवा व सेन्धिया ने विठोजीको हाथीके पावमें बँधवा कर घसिटवाया। इससे उनकी मृत्यु हो गई।

(२) इस घोड़ीका नाम लक्षा था और वह लाल रंगकी थी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा आनन्दराव पँवारपर चढ़ाई की। जसवन्तरावकी बदौलत आलेकरका आक्रमण विफल हुआ।

इसी समय दौलतराव सेंधियाको ख़बर लगी कि जसवन्तराव धारमें है। सेंधियाने आनन्दरावको धमकी दी कि यदि वे जसवन्तरावको क़ैद न कर लेंगे तो ठीक न होगा। यद्यपि आनन्दरावने जसवन्तरावको धारसे जानेके लिए नहीं कहा तथापि इन्होंने वहाँसे कूच किया। चलते वक़्त आनन्दरावने इनको दस हज़ार रुपये और सात घोड़े दिये। इनके साथवाले इनके साथ गये। मार्गमें सात सवार और १२० पैदल सिपाही इनसे और आ मिले। इन्होंने देपालपुरमें काशीराव के सवारों पर हमला किया और सफलता प्राप्त की। यहाँ इनको अच्छी रक़म मिली तथा कुछ घोड़े भी प्राप्त हुए।

जसवन्तरावने लोगोंमें यह प्रकट करना आरंभ किया कि वे मल्हाररावके पुत्र खण्डेरावके लिए लड़ रहे हैं। धारसे कूच करते समय इन्होंने एक मुहरमें "श्रीम्हालसा-कान्त चरणीतत्पर मल्हारजो सुत खण्डेराव होलकर" खुदवा लिया था। ये इसी बहाने सेना इकट्ठी करने लगे। पिण्डारियों, भीलों, मराठों और राजपूतोंको फ़ौज में भरती किया। वज़ीरहुसेनख़ाँ नामक सैयद, जिसने पहले होलकर-सरकारकी नौकरी की थी और जो मालवेके बड़े आदमियोंमेंसे था, तथा अमीरख़ाँ इनकी फ़ौजमें शामिल हुए। ये अपनी सेनाके साथ इधर उधर हमले करने लगे। कसरावादमें काशीरावके सेनापति डूथडरनेकसे युद्ध हुआ। युद्धमें जसवन्तरावकी जीत हुई। इस जीतमें इनको चार तोपें मिलीं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजा जसवन्तराव होलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस युद्धके बाद शीघ्र ही, ड्यूडरनेकने अपनी सेनाके सहित तथा नजीबख़ाँने आठ सौ सवारोंके साथ इनकी ख़िदमत क़बूल की। इन्होंने ड्यूडरनेककी मददसे कुछ अन्य यूरोपियनोंको नौकर रक्खा और कप्तान प्लूमेटकी अधीनतामें दो और फ़ौजें खड़ी कीं। इसके अनन्तर ये महेश्वरकी ओर बढ़े। मारकाटके बिना ही महेश्वरमें प्रवेश किया। इन्होंने महेश्वरमें अहल्याबाईके ख़ज़ानेकी बड़ी खोज-ढूंढ़ की। ख़ज़ानेमें क्या मिला, इसका ठीक पता नहीं चलता। परन्तु कहा जाता है कि २०-३० लाख रुपये वहां इन्हें मिले थे। यह सच है कि महेश्वर पहुंचते ही इन्होंने अपने सिपाहियोंको तनख़्वाह बाँट दी और होलकर-वंश के राज्यप्रबन्धमें हाथ डाला।

जसवन्तराव।

(१७९८-१८११)

जसवन्तराव महेश्वरपर अधिकार जमानेके कुछ महीने बाद बड़गोंदा[१] गये। वहाँ निशाना मारते समय बन्दूकके फट जानेसे इनकी दाहिनी आँखकी ज्योति मारी गई। इससे इन्हें वहां कुछ दिन तक ठहरना पड़ा। इन्होंने इसी समय अमीरख़ाँको एक हाथी, घोड़ा, बहु-मूल्य वस्त्र और जवाहिरात तथा नवाबकी उपाधि दी और हमला करनेके लिए पूर्वकी ओर भेजा।

(१) बड़गोंदा मऊ-परगनेमें है। यह इन्दौरसे १८ मील दक्षिण-पूर्वमें है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस समय युद्ध और लूटपाटका ऐसा हुल्लड़ मचा कि दौलतराव सेंधियाके मालवेके इलाके बहुत कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गये। दौलतराव इस समय पूनेमें थे। वे एक बड़ी सेना जमाकर मालवेकी ओर चढ़ दौड़े। जसवन्तराव भी मुक़ाबलेके लिए तैयार हुए। सेंधियाने जो सेना पहले भेजी वह परास्त हुई। परन्तु सतवास[1] पर जसवन्तरावको सफलता प्राप्त न हुई।

सन् १७९९

इसके कुछ दिनों बाद जसवन्तराव सारङ्गपुर गये। वहां अमीरख़ाँसे भेट हो गई। बरसातका मौसम था। यद्यपि चारों ओर नदी-नाले उफना रहे थे तथापि जसवन्तरावने सेंधियाकी मालवेवाली राजधानी उज्जैनपर चढ़ाई की। सेंधियाकी सेनाने सामना किया। घमसान लड़ाई हुई। जसवन्तरावकी जीत हुई। इन्होंने उज्जैनके निवासियोंसे कर वसूल किया।

बरसात बीतते ही सेंधियाने इन्दौरपर चढ़ाई करने के लिए सरजेराव घाटगेकी अधीनतामें एक बड़ी फ़ौज भेजी। जसवन्तरावने इन्दौरकी रक्षाके लिए उज्जैनसे कूच किया और घाटगेके पहले ही इन्दौर पहुंच गये। घाटगेने बिजलपुर[2] में छावनी डाली। जल्दी ही लड़ाई शुरू हुई। दस दिनतक बराबर लड़ाई होती रही। किन्तु अन्तमें जसवन्तरावको सफलता प्राप्त न हुई। ये अपनी बची-बचाई सेनाके साथ आमघाट चले गये।

---

(१) सतवास काटाफोड़-परगनेमें है। यहां एक मुसलमानी क़िला है।

(२) इन्दौरसे चार मील दक्षिण है। यह गाँव इन्दौर-परगनेमें है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाममें थे तथा इनके सैनिक बड़ी तकलीफ़ में थे। रसद पहुँचनेमें बाधा पड़ रही थी। इधर सैनिक तनख़्वाहके लिए चिल्ला रहे थे। अहल्याबाईके ख़ज़ानेकी कुछ सन्दूकें, जिनमें सोने-चांदीके गहने भरे थे, इनके साथ थीं। वे तोड़ी गईं; और सैनिक सन्तुष्ट किये गये। इसके अनन्तर इन्होंने अपना माल असबाब महेश्वर भेज कर रतलामपर धावा किया। ८० मीलका रास्ता एक दिनमें तय किया। रतलाममें इनके हाथ बहुत द्रव्य लगा। द्रव्य साथ लिये ये महेश्वर लौट आये। अब तक काशीराव दौलतराव सेंधियाके पास थे। दौलतरावने यह देख कर कि काशीरावकी तरफ़दारी करनेसे जसवन्तराव और अमीरख़ाँ इनके इलाकोंमें उत्पात मचाते हैं काशीरावको महेश्वर भेज दिया। जसवन्तरावने काशीरावकी ख़ातिर की।

काशीरावको महेश्वर भेजनेके पहले दौलतरावने सन्धिकी चर्चा चलाई थी। किन्तु जसवन्तरावने ऐसी शर्तें सामने रक्खी थीं, जो सेंधियाको मंजूर न थीं। सन्धिकी चर्चा भङ्ग होजानेपर, इन्होंने युद्धकी विशेष तैयारी की तथा फ़तेहसिंह मानेको बंगशके दो सरदारोंके साथ सेंधिया और पेशवाके इलाक़ोंपर

सन् १८०१ हमला करनेके लिए भेजा; और खुद उत्तरकी ओर कूचकर अनेक नगरोंपर धावा किया। कोटापर भी चढ़ाई की। ज़ालिमसिंहने कोटाको बर्बादीसे बचानेके लिए इनको सात लाख रुपये दिये। मेवाड़के अधिकांश भागको भी इन्होंने नष्ट किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अनेक नगरोंपर हमला करनेके बाद ये १४४००० सैनिक साथ ले अपने और सेंधियाके बीच
सन् १८०२ पेशवा[१] को मध्यस्थ बनानेके बहाने पूने गये। वहाँ पेशवा और सेंधियाकी सम्मिलित सेनासे युद्ध हुआ। युद्धमें जसवन्तराव की जीत हुई। जसवन्तराव दो-तीन महीने पूनेमें रहे। इन्होंने अमृतराव[२] के लड़केको पेशवा बनाना चाहा। किन्तु पेशवा बाजीराव और अङ्गरेज़-सरकारके बीच बसीनवाली सन्धि हो जानेसे और जनरल वेलेसलीके पूनेकी ओर प्रस्थान करनेसे इनकी इच्छा-पूर्त्तिकी आशा जाती रही। ये पूनेसे मालवे की ओर लौटे। मार्गमें इन्होंने निज़ामके गाँवोंको नष्ट किया और औरङ्गाबादपर कर क़ायम किया।

पूनेकी लड़ाईके बाद दौलतराव सेंधिया बुरहानपुरके निकट छावनी डालकर अङ्गरेज़-सरकारसे युद्ध
सन् १८०३ करनेकी तैयारी करने लगे। सेंधियाने नागपुर के राज्याधिकारी रघुजी भोंसलेको अपनी ओर मिलाया और जसवन्तरावको भी अपनी ओर मिलाना चाहा। इसलिए एक सुलहनामा लिखा गया। सुलहनामेके अनुसार सेंधियाने खण्डेराव और भीमाबाई[३] को जसवन्तरावके पास भेज दिया. होलकर घरानेकी मालवेकी पुरानी

(१) बाजीराव द्वितीय (१७९६-१८१८)।

(२) बाजीराव (द्वितीय) पेशवाके पिता (रघुनाथराव का दत्तक पुत्र।

(३) जसवन्तरावकी पुत्री। मल्हारराव (काशीरावके) भाई जब पूनेमें मारे गये तब सेंधियाने खण्डेराव और भीमाबाईको कैद कर लिया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अमलदारियाँ भी सौंप दीं और उत्तर हिन्दुस्तानमें जसवन्तरावको होलकर घरानेके परगने वापिस देनेका वचन दिया। जसवन्तरावने सेंधियाको मदद देनेके लिए पिण्डारियोंकी फ़ौज नर्मदा पार कराई, किन्तु फिर शीघ्र ही इनका इरादा बदल गया और फ़ौज लौटा ली। सेंधियाको लिख भेजा कि इस समय फ़ौजके ख़र्चके लिए हमारे पास रुपया नहीं है और इसलिए हम मदद देनेसे मजबूर हैं। इसके कुछ ही समय बाद अङ्गरेज़-सरकार और सेंधियासे लड़ाइयां होकर बाद में सन्धि हो गई। सेंधियाने जसवन्तरावसे सुलह करनेकी चर्चा पुनः उठाई, परन्तु सुलह न हो सकी।

इसके अनन्तर इन्होंने जयपुर-राज्यपर हमला किया। इससे ब्रिटिश जनरल लार्ड लेकने इनपर चढ़ाई
सन् १८०४
की और इस प्रकार तृतीय महाराष्ट्र-युद्धका सूत्रपात हुआ। ब्रिटिश सेनाकी चढ़ाईकी ख़बर पाकर ये मालवेकी ओर लौटे। ब्रिटिश सेनाने इनका पीछाकर रामपुरा-भानपुरा ले लिया और इसके बाद शीघ्र ही हिंगलाजगढ़पर चढ़ाई की। कई स्थानोंपर युद्ध हुआ। युद्धमें जियादातर होलकर सेना की जीत होती रही अन्तमें ब्रिटिश सेना अधिकृत स्थानोंको छोड़ हट गई।

इसके अनन्तर इन्होंने ६२ हज़ार आदमियोंकी सेना लेकर हिन्दुस्तानमें प्रवेश किया। दिल्लीपर
सन् १८०४-०५
चढ़ाई करनेमें इनको सफलता प्राप्त न हुई। इसी तरह और भी कुछ नुक़सान होनेपर अपनी बची-बचाई सेनाके साथ, सात महीनेके बाद, हिन्दुस्तानसे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वापस होना पड़ा। ये मेवाड़ आये। रोग और युद्धके कारण इनकी फ़ौजमें सैनिकोंकी संख्या कम हो गई थी। चाँदवड़ और जालना प्रदेश भी इनके अधिकारसे निकल गये थे। इसलिए इनकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। परन्तु बरसातके बाद इन्होंने फिर हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की और पञ्जाबकी ओर बढ़े। अङ्गरेज़ी-सेनाने इनका पीछा पकड़ा। अन्तमें दोनों पक्षोंने धनाभाव और अन्य कारणोंसे लड़ाई जारी रखना योग्य न समझा।

इस समय होलकर-राज्यकी दशा अच्छी न थी। सेंधियाकी फ़ौजने, जोकि अङ्गरेज-सरकारके लिए लड़ रही थी, इन्दौरपर दख़ल जमा लिया था। सुलहके लिए इनके प्रस्ताव करनेपर अङ्गरेज-सरकारकी ओरसे इनकी ख़ातिर की गई और यह विश्वास दिलाया गया कि होलकर-घरानेके दख़लमें पहले जो इलाक़े थे, वे इनको दे दिये जायँगे। सन् १८०५ की २४ वीं दिसम्बरको व्यास नदीके किनारे राजपुरघाटमें अङ्गरेज-सरकार और इनके बीच मित्रता और मेल-मिलापकी शर्तें तय हो गईं।

इस सन्धिके होनेसे इन्होंने टोंक, रामपुरा, बूँदी, बूँदी वाली पहाड़ियोंके उत्तरीय स्थानों और बुन्देलखण्डकी अमलदारियोंका स्वत्व छोड़ दिया; अङ्गरेज़-सरकारने शत्रुताके कार्य न करने और इनको अबसे अपना मित्र मानने तथा इनके मामलोंमें किसी तरहका हस्तक्षेप न करनेका वचन दिया। और बुन्देलखंड प्रदेशमें कूँच-परगना भीमाबाई को बतौर जागीरके दिया। इस सन्धिके डेढ़ महीना बाद ही अङ्गरेज-सरकारने, टोंक,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रामपुरा, और उनके पासकी जगहें, जो पहले होलकर-घरानेके अधिकारमें थीं, इनको यह इच्छा प्रकट करते हुए दे दीं, कि वह इनकी अभिलाषायें हर तरहसे नीतिके विचारके साथ पूरी करना और उनसे मित्रता और सद्भाव बढ़ाना चाहती है।

इन्होंने हिन्दुस्तानसे लौटती बार जयपुरपर आक्रमण किया और वहाँसे १८ लाख रुपये लिये। इसके बाद इन्होंने अपनी सेनाका पुनःसङ्गठन किया। २०,००० दक्षिणी सवारों और अन्य लोगोंको, जिनमें पठानोंकी संख्या अधिक थी, अलग किया। इसपर पठानोंने बग़ावत की। कारण, उनकी पिछली तनख़्वाह न मिली थी। ये खण्डेरावको, जिसके नामसे ये होलकर-घरानेके इलाक़ोंपर राज्य करना प्रकट करते थे, उनके पास धरोहर रख बग़ावतकी आग बुझाई। परन्तु फिर भी इनसे बिगड़े हुए सैनिकोंने दीवान गनपतरावका पक्ष लेकर खण्डेरावको गद्दीपर बिठाना चाहा। यह देखकर इन्होंने उन सैनिकोंको तनख़्वाह दी। रुपये पाकर उन सबने अपने अपने घरोंकी राहें नापीं। गनपतराव, जोकि क़ैद कर लिया गया था, बनारस भाग गया।

इसके बाद अमीरख़ाँने, जो बलवा शान्त करनेके लिए भेजा गया था, तनख़्वाह माँगी। इन्होंने
सन् १८०७ अमीरख़ाँको पिड़ावा[1] और टोंक ज़िले दे दिये। इसके बाद जल्दी ही अमीरख़ाँने जयपुर महाराजकी नौकरी कर ली।

---

(१) उस समय पिड़ावाकी सालाना आमदनी पचास हज़ार थी।

इन्होंने भानपुरा (उस समय यहीं इनकी राजधानी थी) पहुंचनेपर, सेनाके पुनःसङ्गठनके काम शुरू किये। ये खुद बड़े शौक़से तोपें ढलानेके काममें परिश्रम करने लगे। दिनमें दो बार नक़ली लड़ाई होती थी। ये प्रत्येक सैनिकका काम देखते और दोष निकालते थे।

सन् १८०८ में खण्डेराव इस संसारसे चल बसे। काशीराव और उनकी पत्नीका भी देहान्त हो गया। इसके बाद जल्दी ही जसवन्तरावमें विक्षिप्तताके लक्षण प्रत्यक्ष होने लगे।

तुलसाबाईका राजप्रतिनिधित्व

जसवन्तरावके विक्षिप्त हो जानेपर बालाराम सेठ प्रत्यक्षमें राज्यका काम करने लगा। किन्तु राज-काजमें उसे तुलसाबाई[1] की अनुमति लेनी पड़ती थी। तुलसाबाई बड़ी ही सुशिक्षिता और बुद्धिमती थी। राज्यमें उसका दबदबा पहलेहीसे था। राजप्रतिनिधिका कार्य करनेसे उसका दबदबा और भी बढ़ गया। उसने मल्हारराव[2] को गोद भी ले लिया था।

यद्यपि अमीरख़ाँने जयपुर-महाराजकी नौकरी कर ली थी, तथापि उसने, अपने सम्बन्धी ग़फ़ूरख़ाँ को, होलकर-दर्बारमें रख दिया था। होलकर सरकारकी ओरसे बालारामने जसवन्तराव की विक्षिप्तावस्थामें ग़फ़ूरख़ाँको, उसके एक हज़ार सवारोंके ख़र्चके लिए बीस हज़ार रुपये मासिक आयवाला जावरेका इलाक़ा और नवाबका लक़ब दिया।

---

(१) जसवन्तरावकी उपपत्नी।

(२) जसवन्तरावकी उपपत्नी केसराबाईके पुत्र।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इसी समय सेनाकी छावनी कालीसिन्ध नदीके तट-से हटाई और मऊ लाई गई। बालारामने पलटनकी टुकड़ियों और उनके साथवाले तोपखानोंका पुनःसङ्गठन किया और धर्माकुंवरको, जोकि जसवन्तरावका कृपा-पात्र था, सारी पलटनका सेनानायक नियत किया। उसने जसवन्तराव, मल्हारराव और तुलसाबाईको क़ैद कर मरवा डालना और ख़ुद राजा बनना चाहा। किन्तु अमीरखाँके ऐन समयपर पहुँच जानेसे इन तीनोंकी जानें बँच गईं। धर्माकुंवरने अपनी नमकहरामीका उचित फल पाया।

इधर जसवन्तरावकी विक्षिप्तता दिनोंदिन बढ़ती गई। अन्तमें इनका बोलना भी बन्द हो गया। सन् १८११ की २८वीं अक्टूबरको इनके जीवन-नाटकका परदा सदाके लिए गिर गया। भानपुरेमें इनकी छतरी और संगमरमरकी मूर्त्ति है।

जसवन्तरावका क़द मझोला था। शरीर हृष्ट-पुष्ट और रंग साँवला था। ये बड़े ही वीर और साहसी थे। घोड़ेकी सवारी और हथियारोंके चलानेमें, ख़ासकर नेज़ेबाज़ीमें, ये अपना सानी न रखते थे। इनसे लोग डरते और प्रेम भी करते थे। इनको विशेष शक्ति-मान् बननेकी बड़ी ही अभिलाषा थी। इनका जीवन लड़ाइयोंमें ही बीता। जिस जीवन-पद्धतिका इन्होंने अनु-सरण किया था, वह यद्यपि इनको पसन्द न थी, तथापि सेंधियाके कारण ये उसका त्याग न कर सके।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मल्हारराव (द्वितीय)।

(सन् १८११-१८३३)

जसवन्तरावकी मृत्यु हो जानेपर तुलसाबाईने
तुलसाबाईका राजप्रति-निधित्व १८११-१८१७
मल्हाररावको गद्दीपर बिठाया। कोटाके प्रसिद्ध राजप्रतिनिधि ज़ालिमसिंह और नवाब अमीरख़ाँने भानपुरे आ नज़र दी।

इस समय राज्यकी दशा अच्छी न थी। अधीन इलाक़ेदारोंने भी स्वतन्त्रता प्रकट की। भील लोग जङ्गलोंसे निकल उत्पात मचाने लगे। सेना तनख़्वाहके लिए अलग चिल्ला रही थी। तुलसाबाई और मल्हाररावके विरुद्ध साज़िशें होने लगीं। सबसे पहले दौलतराव सेंधियाने साज़िशकी। परन्तु कोटाके ज़ालिमसिंह और ग़फ़ूरख़ाँ के प्रयत्नसे सेंधियाकी साज़िश व्यर्थ हुई।

अमीरख़ाँ, ग़फ़ूरख़ाँके ज़रिये तुलसाबाईके कामोंमें दस्तन्दाज़ी किया करता था। तुलसाबाईको यह पसन्द न था। इसलिए उसने गँगराड़में पठानोंकी सेनापर हमला किया, किन्तु सफलता प्राप्त न हुई। बैर बढ़ गया। अन्तमें तुलसाबाई और अमीरख़ाँ दोनोंने कोटाके ज़ालिमसिंहको मध्यस्थ चुना। इसी समय ख़बर लगी कि अङ्गरेज़ी सेना मालवेकी ओर आ रही है।

पेशवा बाजीरावने सब सर्दारोंको इकट्ठाकर अङ्गरेज-
सन १८१८
सरकारसे लड़नेका विचार किया और रुपयेका लालच देकर सेंधिया, अमीरख़ां औरहोलकर-सरकारको भी अपनी ओर मिलाना चाहा। होलकर-सरकारने पेशवाका पक्ष लेना क़बूल नहीं किया किन्तु

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अन्तमें फौजी अफ़सरोंके दबावसे पूना भेजनेके लिए सेना जमाकी जाने लगी। होलकर-सरकारकी सेना अभी महीदपुरहीमें थी कि जनरल मालकम सेना लिये आगर आ धमके और दूसरी सेना कमाण्डर-इन-चीफ़ सर टी० हिसलपकी अधीनतामें उज्जैन आ पहुंची।

जनरल मालकमने आगरसे मल्हाररावको सुलहके लिए पत्र भेजा। परन्तु कुछ उत्तर न पानेसे वे रवाना होते हुए उज्जैनकी ओर बढ़े। उन्होंने होलकर-सरकारके प्रधानको कहला भेजा कि यदि पहलेकी सन्धि भङ्ग न करना चाहो तो उज्जैनमें कमाण्डर-इन-चीफ़ सर टी० हिसलपके पास अपना प्रतिनिधि भेज दो। होलकर-सरकारने अपना प्रतिनिधि भेजा। सन्धिकी शर्तें पेश हुईं। मल्हाररावके दरबारमें सन्धि की शर्तोंके सम्बन्धमें वाद विवाद चलने लगा। तुलसाबाई मल्हाररावके साथ अङ्गरेजी छावनीमें जाना पहलेहीसे ठीक समझती थी और उसके मंत्री तथा पुराने हितचिन्तक भी उससे सहमत थे। परन्तु कुछ सेना-नायकोंको यह बात पसन्द न थी। और इसीलिए उन लोगोंने तुलसाबाईको क्षिप्राके किनारे ले जाकर मारडाला। इस प्रकार तुलसाबाई मारी गई। उसने दस वर्ष तक होलकर-राज्यकी डोर अपने हाथ रक्खी थी।

इस समय अङ्गरेज़ी सेना होलकर-सेनाकी छावनीसे आठ मीलके अन्तरपर आ पहुंची थी। होलकर-सरकारकी सेनामें फूट फैल रही थी। मंत्रिगण कैदमें डाल दिये गये थे, क्योंकि वे अङ्गरेज़ोंसे सुलह करना चाहते थे। सन्धिके सम्बन्धमें जवाब जल्दी न जानेसे ब्रिटिश-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सेना महिदपुरकी तरफ़ चल पड़ी । उस समय महाराजके नामसे कुछ फ़ौजी अफसरोंने ब्रिटिश सेना की ओर चिट्ठी भेजी, जिसमें उसको यह दोष दिया कि उसका चढ़ आना मित्रताके विरुद्ध हुआ है और यह भी कहा कि अमीरख़ाँ सन्धि करनेके लिए बुलाया गया है, लेकिन अङ्गरेज़ी सेनाके विल्कुल नज़दीक आजाने के कारण होलकर सेनाको लड़ाईसे रोक रखना मुश्किल होगा । यह ख़यालात जियादातर पैदल सिपाही और अफसरों के थे । किन्तु मुख्य सेना अर्थात् सवार और उनके अफसर जो लड़ाईके विरुद्ध थे, महाराजको लेकर अलाहदा हो चुके थे । ऊपर लिखी चिट्ठी का जवाब ब्रिटिश सेनाकी ओरसे इस अभिप्राय का भेजा गया कि महाराज अगर सुलह चाहते हों और अपनी विरुद्ध सेनाको रोक न सकते हों तो वे फ़ौरन चले आयें और ब्रिटिशका आश्रय लें । यह जवाब महीदपुरसे तीन मीलके फ़ासलेपर भेजा गया । लेकिन वह पहुंच न सका; और इतनेमें ही ब्रिटिश सेना महीदपुर मुक़ामपर आ पहुँची । तुरन्त युद्ध शुरू हो गया । इस युद्धमें होलकर सेना का कुछ हिस्सा ही सिर्फ़ लड़ रहा था । वह पराजित हुआ । इसके बाद केसराबाईने ताँतियाजोग[१] (बिट्ठल महादेव किबे) को मन्त्री नियतकर सुलहके लिए भेजा । सुलह की शर्तें हुईं । सन्धिपत्र लिखा

---

(१) अनन्तर ताँतियाजोगको राज्यसे जागीर मिली थी । इन्दौरराज्यके वर्तमान एक्साइज मिनिस्टर रावबहादुर सरदार माधवराव बिनायक किबे एम० ए०, एम० आर० ए० एस० ताँतियाजोगके वंशज हैं ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गया। जिसमें कड़ी कड़ी शर्तें अङ्गरेजोंने डालीं। तांतिया जोगने बहुत कुछ कोशिश की और महाराजकी नाबालिगी और सेनाका फितूर मालकम साहबसे जाहिर किया लेकिन कुछ असर न हुआ और वे ही शर्तें लगभग मंजूर करनी पड़ीं। यह मन्दसोरकी सन्धि कही जाती है।

इस सन्धिसे मल्हाररावने, राजपूत राजाओंसे—जैसे उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी, करौली—जो कर और मालगुज़ारी मिलती थी, उसे अङ्ग-रेज़-सरकारको छोड़ दिया; रामपुरा, बसन्त, राजेपुरा, बलिया नीमसराल, इन्द्रगढ़, बूंदी, लखेरी, सामेदी, ब्राह्मणगाँव, दसई और अन्य स्थानों से जोकि बूंदीकी पहाड़ियोंके बीचमें या उत्तरमें हैं, अपना स्वत्व हटा लिया तथा सतपुड़ाकी पहाड़ियों के बीचवाले या उनके दक्षिणवाले इलाक़ों, ख़ानदेशवाली अमलदारियों तथा निज़ाम और पेशवाके इलाक़ोंसे मिले हुए अपने ज़िलोंका सम्पूर्ण अधिकार अङ्गरेज़-सरकारको दे दिया और पँचपहाड़, डग, गँगराड़ ऊर आदि परगने, कोटाके ज़ालिमसिंहको दे दिये। लेकिन छोटे राजा, झाबुआ, नरसिंहगढ़, होलकर सरकारके आधीन रहे गफ़ूरखाँ की जायदाद वंशपरम्पराके लिए उसको इस शर्त पर दी गई कि वह ६०० सवार नौकरीके लिए हाजिर रक्खे। अङ्गरेज-सरकारने इक़रार किया कि वह महाराजा होलकर की सन्तानों सम्बन्धियों, आश्रितों (जागीरदार आदि), प्रजाओं या कर्मचारियोंसे किसी तरहका वास्ता न रक्खेगी; उन सबपर महाराजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

होलकरका पूर्ण अधिकार रहेगा। इसी प्रकारका इक़रार अङ्गरेज़सरकारने निज़ाम हैदराबाद और सेंधिया-सरकारसे भी किया है। अङ्गरेज़सरकारने स्वीकार किया कि वह होलकर-दर्बारमें अपना मन्त्री तथा राज्यमें शान्ति स्थापित रखनेके लिए सेना रक्खेगी और महाराज अपना वकील बड़े लाटके पास भेज सकेंगे।

सन् १८१८ में इन्दौर राजनगर (राजधानी) नियत किया गया। इसके बाद जल्दी ही दीवान, ताँतिया-जोगने खर्चमें कमी करनी शुरू की। इस समय इलाकों-से बहुत कम मालगुज़ारी वसूल होती थी। राज-काज चलानेके लिए कर्ज़ काढ़नेकी ज़रूरत पड़ी। सेनाका एक भाग अङ्गरेज़-सरकारके एक फ़ौजी अफ़सरकी अधीनतामें महीदपुर वगैर: की तरफ शांति कायम करनेके लिए भेज दिया गया। कुछ सैनिक दबदबा जमानेकी गरज़से इलाक़ोंमें भेजे गये। केवल पाँच सौ सवार राजनगरमें रक्खे गये। रक्षा और पुलिसके काम करनेके लिए कुछ पैदल सेना भी राजनगरमें रक्खी गई।

सन् १८१६ अब तक राज्यमें सर्वत्र शान्ति स्थापित न हुई थी। कुछ लोगोंने इधर-उधर उत्पात मचाये। सबसे पहले कृष्णाकुँवर नामक एक व्यक्तिने अपने आपको काशीरावका भाई, मल्हारराव प्रकटकर चम्बलके पश्चिम एक सेना खड़ीकी। उसने अरबों और मकरानियोंकी मदद्से कई महीने उत्पात मचाया। अन्तमें महीदपुरकी सेनाने उसे मार भगाया। इसी समय मल्हाररावके चचेरे भाई हरिरावने भी सिर उठाया। हरिराव क़ैद कर लिये गये और महेश्वरमें रक्खे गये।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रामपुरेकी हदपर भाटखेड़ीके ठाकुर और अन्य लोगोंने बग़ावत खड़ीकी। परन्तु महीदपुरकी
सन् १८२१
सेनाने उन लोगोंको धर दबाया। ठाकुरको होलकर-सरकारसे जो ज़मीन मिली थी, वह ज़ब्त कर ली गई। अहमदगढ़ और दतौलीके क़िले, जिनके कारण विद्रोहियोंको बग़ावत करनेका हौसला हुआ था मिट्टीमें मिला दिये गये।

सन् १८२६ में ताँतियाजोगकी मृत्यु हो गई। उसके मन्त्रित्व-कालमें राज्यकी आमदनी दस बारह लाखसे बढ़कर ३० लाख हो गई थी। उसकी मृत्युके बाद राज्यप्रबन्ध क्रमक्रमसे बिगड़ता गया।

उदयपुरके इलाक़ेदारबेगूके ठाकुरने नंदवास (नँदबाई) पर दो बार आक्रमण किया। परन्तु राज्य की
सन् १८२९-१८३०
सेनाने उनको दोनों बार मार हटाया।

२७ अक्टूबर, सन् १८३३ को २८ वर्षकी अवस्थामें मल्हाररावकी मृत्यु हो गई। इन्दौरमें इनकी छतरी है।

इनका क़द मझोला और रंग साँवला था। ये बड़े ही उदार और दयालु थे। पुराना महल (ओल्ड पैलेस) और पंढरीनाथका मन्दिर, जोकि नगरके मध्यमें है, इनके ही समयमें बने हैं।

मार्तण्डराव।

(१८३३-३४)

मल्हाररावके कोई औरस पुत्र न था। उनकी मृत्यु के समय उनकी पत्नी गौतमबाईने केसराबाईकी सलाह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से बापू होलकरके पुत्र मार्तण्डरावको गोद ले लिया था। उस समय मार्तण्डरावकी अवस्था तीन-चार सालकी थी। सन् १८३४ की १७ वीं जनवरीको मार्तण्ड-राव इन्दौरके राजसिंहासनपर बैठे। इसके बाद जल्दी ही हरिरावको राजसिंहासनपर बिठानेकी चर्चा उठी। हरिरावका राजसिंहासनपर सबसे अधिक हक़ था। सब लोग हरिरावके पक्षमें थे। केसराबाई हरिरावको गद्दीपर बिठाना न चाहती थीं। धीरे धीरे इस बातकी अफ़वाह उड़ने लगी कि राज्यप्रबन्धसे सब लोग असन्तुष्ट हैं। इन्दौरमें यह ख़बर भी पहुँची कि हरिराव को उनके अनुयायियोंने भीलों और मेवातियोंकी मददसे क़ैदसे छुड़ा लिया और महेश्वरमें दख़ल कर लिया। इस ख़बरने नगर और महलमें खलबली फैला दी। हरिरावके विरुद्ध इन्दौरसे फ़ौज भेजी गई। किन्तु फ़ौज उनसे मिलगई। समय विपरीत देखकर केसराबाईने हरिरावको गद्दी देना चाहा और इसके लिए उन्हें बुला भेजा। हरिराव महेश्वरसे इन्दौर आये।

हरिराव।

(सन् १८३४-१८४३)

सन् १८३४ की १७ वीं अप्रैलको हरिराव मसनदपर बैठे। राज्यका कुछ सुधार हुआ। भारतके बड़े लाट लार्ड बेंटिंक[1] ने ख़रीता भेजकर मुबारकबादी दी। ख़रीता का भाव नीचे दिया जाता है:—

---

(१) लार्ड बेंटिंकने सन् १८२८ से १८३५ तक भारतके बड़े लाटका पद सुशोभित किया था।

श्रीमन्त महाराजा हरिराव होलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"यद्यपि श्रीमन्तके राजसिंहासनपर बैठनेका समाचार सुन मुझे बहुत सन्तोष हुआ, तथापि मैंने उस शुभ अवसरपर बधाई देनेमें कुछ विलम्ब किया। कारण, मैं चाहता था कि श्रीमन्तके हाथमें शासनसूत्र आनेसे राज्यमें क्या क्या सुधार होते हैं, यह भी ज़रा देख लूँ।

"ईश्वरको धन्यवाद है कि अब इन्दौर-राज्यकी परिस्थितिमें सुधार होनेकी आनन्दवार्ता भी मैंने सुनी है और उससे परम हर्षित हो मैं श्रीमन्तको बधाई देता हूं। सर्वाधीश्वर प्रभुसे मेरी यही प्रार्थना है कि यह शुभकर सुधार स्वयं श्रीमन्तके और श्रीमन्तके आश्रितोंके लिए सुखकर हो और श्रीमन्तके सुशासन-छत्रकी छायामें प्रजा चिरकाल न्याय और सुरक्षाका सुख पावे।

"राज-काजपर दत्तचित रहना प्रत्येक बुद्धिमान् शासकका प्रधान उद्देश्य होता है। यह लोकोक्ति है कि 'एक घड़ी न्याय करना सालभर भजन करनेसे उत्तम है।' मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीमन्त अपने इस लोकके तथा परलोकके कल्याणपर दृष्टि रख अपनी दुःखी प्रजाको दुःखसे मुक्त करेंगे, तथा पूर्वशासकोंके मनमाने कामोंसे देशमें जो कितनी ही प्रकारकी अव्यवस्थायें फैल गई हैं उन्हें दूरकर सुप्रबन्ध करेंगे। निश्चय रखिये कि उक्त सत्हेतुके लिए परिश्रम उठानेसे श्रीमन्तकी गवर्नमेंट और अङ्गरेज़-सरकारके बीच मित्रता और भी दृढ़तर होगी तथा मेरे हृदयमें सर्वाधिक सन्तोष होगा और श्रीमन्तके देशमें सुख-सम्पत्तिकी वृद्धि होगी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"विनय है कि श्रीमन्त मुझे अपना सच्चा हित-चिन्तक समझें और समय समय पर अपने स्वास्थ्य तथा सौख्यके समाचारोंसे सन्तोषित करते रहें।"

मार्तण्डराव सिपाहियोंकी निगरानीमें दक्खिन भेज दिये गये। उनको, उत्तराधिकारका दावा छोड़ने पर, पाँच सौ रुपया माहवार देना निश्चित हुआ।

सन् १८३५ में विद्रोहियोंका एक बड़ा दल राजमहल-की फाटकके भीतर जा पहुंचा, परन्तु मार निकाला गया।

सन् १८३६ में इन्होंने भारतके बड़े लाट लार्ड आक-लेण्ड[१] के पास अपना वकील भेजा। बड़े लाटने वकील-का बड़ा सत्कार और सम्मान किया तथा उसे कलकत्ते के प्रत्येक दर्शनीय स्थान और वस्तुयें दिखाईं। कई दिनोंके बाद उसको, बहुमूल्य वस्तुयें[२] हरिरावको भेंट देनेके लिए देकर, बिदा किया।

---

(१) बेरन आकलेण्डने १८३७-४२ तक भारतके बड़े लाटका पद सुशोभित किया था।

(२) मोतियोंकी एक लरी, चोगा और सिरपेंच, एक जोड़ा दुशाला, एक जोड़ा दुशाला चद्दर, दो मुलतार्ई लाई, एक दुशालेका रूमाल, एक दुशालेकी पगड़ी, कोचीनका कपड़ा एक थान, कोचीनका बेलबूटेदार कपड़ा एक थान, कीमखाबके दो थान, लट्ठेके दो थना, बनारसी दुपट्टा, शबनमके चार थान, सोनेसे मढ़ा मुश्कका माला, एक तलवार, एक ढाल, साज–सामान-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हरिरावका स्वास्थ्य अच्छा न था, दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा था। गद्दीका कोई उत्तराधिकारी न था। इसलिए इन्होंने जोतसी खेड़ागाँव (जोशी गुड़ारिया) के ज़मीदार बापू होलकरके लड़के खण्डेरावको गोद ले लिया। उस समय खण्डेरावकी अवस्था ११ सालकी थी।

राज-काजमें पढ़े लिखे लोगोंकी सहायता आवश्यक होती है। परन्तु अब तक राज्यमें लोगोंकी शिक्षाके लिए कोई स्कूल न था। सन् १८४३ में इन्होंने विद्यादानके लिए नगरमें एक मदरसा, जोकि इस समय सिटी हाई स्कूलके नामसे प्रसिद्ध है, खोल दिया। मध्यभारतमें यह पहला ही स्कूल था।

हरिरावका स्वास्थ्य सुधरा नहीं, प्रत्युत बिगड़ता हो गया। सन् १८४३ की २४ वीं अक्टूबरको इन्होंने जीवन-लीला संवरण की। इन्दौरमें इनकी छतरी है।

हरिरावका रंग साँवला तथा जिस्म और क़द मझोला था। ये बुद्धिमान्, वीर, सहनशील, दयालु, निष्कपट, न्यायप्रिय और स्पष्टवादी थे। इन्होंने सती होना और शिशु-हत्या बन्द की थी। हरिसिद्धिका मन्दिर, जोकि इन्दौर नगरमें है, इनके ही समयमें बना था।

सहित सन्दूक़में रक्खी एक दुनाली बन्दूक, साज-सामान सहित सन्दूक़में रक्खे दो तमञ्चे, सुन्दर जिल्द बँधी महाभारतकी पहली और दूसरी जिल्द, एक ख़ूबसूरत दीवार-घड़ी, बाजेका एक सन्दूक, चोनीके दो बरतन, सीपके तीन इत्रदान, इत्रकी दो बोतलें, एक हाथी झूल और हौदा सहित और दो घोडे, साज-सामानके साथ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खण्डेराव ।

(सन् १८४३-४४)

सन् १८४३ के नवम्बर महीनेमें, तेरहवीं तारीखको खण्डेराव इन्दौरके राजसिंहासनपर बैठे। भारतके बड़े लाट लार्ड एलेनबोरो[1] ने इस अवसर पर खरीता भेजा। खरीताका आशय इस प्रकार था :—

"विश्वासियोंके मित्र महाराजा साहब, आप सदा आरोग्य रहें। मित्रताको दृढ़ करनेवाला आपका पत्र मिला, जिससे मेरे मित्र महाराज हरिराव होलकरके अनित्य लोकको छोड़ने और स्वर्गवासी महाराजके बाद आपके राजसिंहासनपर बैठनेके समाचार विदित हुए। पहले तो उक्त हृदय-विदारक समाचारसे मुझे असीम दुःख और शोक हुआ, किन्तु इस आनन्द-समाचारसे कि आपने इन्दौरके राजसिंहासनको अलंकृत किया है, मुझे सुख और प्रसन्नता प्राप्त हुई। सर्वशक्तिमान् परमेश्वर श्रीमन्तके आरोग्य तथा ऐश्वर्यको बढ़ावें और इस राज सिंहासनारोहणको सुखमय बनावें। श्रीमन्तके राज्यके सर्वसाधारण प्रजाजन तथा अन्य सब लोग सन्तुष्ट रहें और श्रीमन्तके उत्तम राज्यप्रबन्ध तथा न्यायी गवर्नमेंट के कृतज्ञ बने रहें। वैसे ही उस पवित्र सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकी श्रीमन्तपर जो सर्वाधिक कृपा हुई है और

---

(१) लार्ड एलेनबोरो सन् १८४२ से १८४४ तक भारतके बड़े लाट थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजा तुकोजीराव होलकर (द्वितीय)

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्तको अनुपम प्रसाद प्राप्त हुआ है उसके लिए श्रीमन्त भी कृतज्ञ होकर यह समझते रहें कि उस परमेश्वरकी प्रजारूपी परमोत्तम वस्तुके रक्षणावेक्षण और शान्ति जीवनके लिए श्रीमन्त ही आधार हैं और उस प्रजाकी प्रत्येक बातका न्यायपूर्वक निर्णय करना सदा श्रीमन्तके लिए आवश्यक है। हित क्या है और अहित क्या है, मित्र कौन और शत्रु कौन है, इन बातोंका विवेचनपूर्वक निर्णय करनेमें श्रीमन्त सदैव जागृत रहेंगे।

"आशा है कि श्रीमन्त इस विश्वासी मित्रको सदैव श्रीमन्तके कल्याण तथा राज्यकी उन्नतिका इच्छुक समझेंगे। कृपया कुशल-समाचारके पत्रोंसे मुझे आनन्दित करते रहें। अधिक क्या लिखूँ।"

ये नाबालिग़ थे। इसलिए राज्यप्रबन्धके सञ्चालनके लिए रिजेंसी कौंसिल क़ायम हुई। परन्तु ये अधिक दिनों तक राज्यके शासक न रह सके। तीन महीनेके बाद ही, सन् १८४४ के फ़रवरी महीनेकी १७ वीं तारीख़को इनका देहान्त हो गया। इनकी छतरी इन्दौरमें है।

तुकोजीराव (द्वितीय)।

(सन् १८४४-८६)

खण्डेरावकी मृत्यु हो जानेपर भाऊ होलकरके द्वितीय पुत्र, मल्हाररावको इन्दौर-राज्यकी गद्दी देना निश्चित हुआ। २७ जून, १८४४ ईसवीको मल्हारराव, दस वर्षकी अवस्थामें, तुकोजीराव (द्वितीय) के नामसे गद्दीपर बैठे। ये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस समय नाबालिग़ थे। इसलिए उसी रिजेंसी कौंसिल-को, जोकि खण्डेरावके राज्यकालमें थी, राज्यप्रबन्धका काम चलाना पड़ा। रिजेंसी कौंसिल में, सरदार राजा-भाऊ फनसे, दीवान रामराव पलसीकर (आबा साहब) और खासगी-दीवान गोपालराव (बाबा साहब) केसरी बाईकी निगरानीमें राज्यप्रबन्धका काम करते थे। इस समय राज्य में अनेक प्रकारके सुधार किये गये। दीवानीमुक़द्दमोंके लिए एक कचहरी क़ायम की गई। नगरवासियोंकी चिकित्साके लिए एक अस्पताल खोला गया।

तुकोजीरावकी शिक्षाका भी समुचित प्रबन्ध किया गया। सन् १८४३ में मुंशी उम्मेदसिंह[१], जोकि दिल्ली कालेजके एक नामी-ग्रामी विद्वान् थे और उस समय आगरा सेक्रेटरीएटमें काम करते थे, इनको अङ्गरेज़ी-शिक्षा देनेके लिए नियत किये गये। रेजीडेंसी दफ़्तरमें मुंशी उम्मेदसिंहको मीरमुंशीका भी काम करना पड़ता था। इन्दौर-मदरसेकी देखरेखका काम भी उनको सौंपा गया। अनन्तर रामचन्द्र भाऊ[२] तुकोजीरावकी शिक्षामें सहायता पहुँचानेके लिए मास्टरकी हैसियतसे रक्खे गये। इनको संस्कृत और फ़ारसीकी शिक्षा देनेका

---

(१) इन्दौर राज्यके भूतपूर्व प्रधान सचिव स्वर्गीय रायबहादुर नानकचन्दजी सी० एस० आई०, सी० आई० ई० के पिता (मशीरुद्दौला रायबहादुर मुंशी उम्मेदसिंहजी)। ये राजकाजमें भी विशेष भाग लेते थे।

(२) राव रामचन्द्रराव भाऊ साहब रेशमवाले। अनन्तर मन्त्रीका कार्य भी इनके सुपुर्द किया गया था।

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

भी प्रबन्ध किया गया। ग्रन्थ-शिक्षाके साथ ही इनको घोड़ेकी सवारी, गोली चलाना, तैरना आदि भी सिखाया जाता था। मुंशी उम्मेदसिंह इनको नित्य दो घण्टे अङ्ग-रेज़ी पढ़ाते थे और विशेषतया इनकी शिक्षाकी देखभाल करते थे।

कुछ समयके बाद ये अनुभव प्राप्त करनेके लिए राजप्रबन्धमें भी भाग लेने लगे। सन् १८४६ के सितम्बर महीनेमें केसरीबाई की मृत्यु हो जानेपर ये राज्यप्रबन्ध-में विशेष भाग लेने और मुंशी उम्मेदसिंह और रामचन्द्र-भाऊकी सलाहके अनुसार राजकाज करने लगे। इससे इनकी शिक्षाका और भी विकाश हुआ।

भारतके भिन्न भिन्न देशोंकी स्थिति देखनेके विचारसे इन्होंने बहुत थोड़े आदमियोंके साथ विशेष-
१८५१-५१
तया घोड़ेकी सवारीपर हिन्दुस्तानकी ओर यात्रा की और कोटा, कुशलगढ़, हिण्डौन, भरतपुर, आगरा, मथुरा, वृन्दावन, मुज़फ्फ़रनगर, रुड़की, हरि-द्वार, कनखल, सहारनपुर, थानेसर, कर्नाल, पानीपत, देहली, रेवाड़ी, अलवर, जयपुर, अजमेर आदिमें भ्रमण किया।

८ मार्च, १८५२ ईसवीको इन्होंने राज्यशासनकी डोर अपने हाथमें ली। इससमय राज्यकी सालाना आमदनी २२ लाख थी। इन्होंने शासनकी डोर अपने हाथमें लेते ही अस्पताल और मदरसेके लिए समुचित

(१) इनकी छतरी इन्दौर नगरमें है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मासिक व्ययकी मंजूरी दी। राज्याधिकार ग्रहण करनेके अनन्तर कुछ दिनोंके बाद ही रिजेंसी कौंसिलके मेम्बरों, अपने शिक्षक, मित्रों, अनुयायियों आदिको इनाम देनेके लिए एक दर्बार किया। इन्होंने इस दर्बारमें खासगी-दीवान गोपालरावको जागीरकी सनद नई लिख दी; अपने शिक्षक मुंशी उम्मेदसिंहको मशीरुद्दौला और रायबहादुरकी उपाधि तथा दो गाँव जागीरमें दिये; रामचन्द्रभाऊको रावकी पदवी और दो गाँव जागीरमें दिये; अपने मित्र, साथी और सहपाठी खुमानसिंहको एक गाँव जागीरमें दिया और रिसालेका बख़्शी (कमाण्डर) नियत किया; अपने दूसरे मित्र भवानी सिंह दुबे[१] को जागीरमें एक गाँव और सरनौवत (हाउस होल्ड केवलरीका कमाण्डर) का पद दिया तथा अन्य कुछ लोगोंको भी जागीरें और इनाम दिये।

इसके बाद जल्दी ही इन्होंने बम्बई, पूना आदि दक्खिनके प्रसिद्ध नगरों की सैर की।

इन्होंने, दक्खिनकी यात्रासे लौटकर, सार्वजनिक शिक्षाके लिए नगरमें एक पुस्तकालय खोलनेकी आज्ञा और सहायता दी। अबतक राज्यमें कोई प्रेस न था। प्रेसकी ज़रूरत थी। इसलिए एक लिथो-प्रेस खोला गया और 'मालवा-अख़बार' नामका एक हिन्दी-उर्दू साप्ताहिक पत्र भी इस प्रेससे छपकर निकलने लगा। मध्यभारतमें यह पहला ही सामयिक पत्र था।

---

(१) श्रीयुत भवानीसिंहजी दुबे सरनौवतके सुपुत्र श्रीयुत दुर्गाप्रसादजी दुबे इस समय होलकर-सरकारकी सेनामें कमाण्डर-इनचीफ़ हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १८५४ में रुड़कीमें गङ्गाकी नई नहर खोलनेका जलसा हुआ। इस जलसेमें शरीक होनेके लिए होलकर-सरकारके प्रतिनिधि, रामचन्द्रभाऊ और बख़्शी खुमान-सिंह, रुड़की गये। उन्होंने वहाँसे वापस आकर तुकोजीरावको नहरका वर्णन सुनाया। तुकोजीरावने, नहरका वर्णन सुनकर अपने राज्यमें आबपाशीके लिए कुँएँ और तालाब खुदवानेका निश्चय किया और इसके लिए आबपाशीका महकमा क़ायम किया। रैयतको आवपाशीके कामके लिए कुँएँ आदि खोदनेके निमित्त तकावी भी दी जाने लगी।

इस समय यहां अफ़ीमका व्यापार बहुत अधिक बढ़ा हुआ था। बम्बईके द्वारा अफ़ीम चीन भेजी जाती थी। माँग अधिक होनेसे अफ़ीमका भाव भी बहुत चढ़ गया था। इससे किसान अफ़ीमकी खेतीपर बहुत अधिक ध्यान देते थे। तुकोजीरावने भी लोगोंको अफ़ीमकी खेतीके लिए बड़ी उत्तेजना दी। साहूकारोंको इस व्यापारमें जो अड़चनें पड़ती थीं उन्हें दूर किया। साहूकारोंको इस व्यापारसे बहुत फायदा होता देखकर इन्होंने इन्दौरमें (सन् १८५४ के लगभग) एक दूकान खोल दी। यह सदाशिव मार्तण्डकी दूकान[१] कही जाती थी। साहूकारोंको अफ़ीमके लिए कम व्याजपर रुपया दिया जाने लगा। कुछ वर्षोंके बाद इस दूकानकी एक शाखा बम्बईमें खोली गई, और राज्यके कितने ही परगनोंमें भी इसकी शाखायें खोली गईं।

---

(१) महाराज शिवाजीरावके राज्यकालमें यह दूकान तोड़ दी गई।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नगरवासियोंका जल-कष्ट दूर करनेकी बात ये बहुत दिनोंसे सोच रहे थे। सन् १८५५ में इन्होंने नगरमें नलके द्वारा जल पहुँचानेका काम आरंभ कराया। इसके लिए नगरसे ४ मीलपर पीपल्या गांवमें एक बड़ा तालाब खुदवाया। सन् १८६२ के लगभग नलके द्वारा नगरमें जल पहुँचानेका काम पूरा हुआ, जिससे प्रजाको बड़ी सुविधा हुई।

सन् १८५७ में, जब भारतमें सिपाही-विद्रोह फैल रहा था, यहांकी मालवा कण्टिएजेण्ट और मऊकी हिन्दुस्तानी पल्टन विरुद्ध हो गई। तुकोजीरावने इस विद्रोह में अङ्गरेज़-सरकारको उचित सहायता पहुँचाई। कितने ही अङ्गरेज़ोंको उनके बालबच्चोंके सहित, राजभवनमें पनाह दी। एक दिन बाग़ी फ़ौजने राजभवनके पास आकर तुकोजीरावसे उन अङ्गरेजोंके, जोकि राजभवनमें रक्खे गये थे, सिर माँगे। तुकोजीरावने बाग़ी सेनाको वीर-शब्दोंमें बेधड़क यह जवाब दिया—"मैं जीते जी तुम लोगोंको उनका एक बाल भी छूने नहीं दूँगा"। अनन्तर बाग़ी फ़ौज आगरेके लिए रवाना हुई और इस तरह विद्रोह शान्त हुआ।

११ नवम्बर १८५९ ईसवीको युवराज शिवाजीरावका शुभ जन्म हुआ।

भारतके बड़े लाट लार्ड केनिङ्ग[1] ने सन् १८६१ की १२ वीं जनवरीको जबलपुरमें देशी महाराजाओंका दर्बार

(१) लार्ड केनिङ्ग सन् १८५८ से १८६२ तक भारतके बड़े लाट थे।

करना निश्चित किया। इस दर्बारमें सम्मिलित होनेके लिए बड़े लाटने इनके पास ख़रीता भेजा। ये चार हज़ार हमराहियोंके साथ दर्बारमें शामिल होनेके लिए जबलपुर गये। बड़े लाटने वहाँ इनको बहुमूल्य भेट दी। इनके कई मुसाहिबोंको ख़िलअतें मिलीं

इसी वर्ष अङ्गरेज़-सरकारने इनको जी० सी० एस० आई० की उपाधिसे सम्मानित किया।

सन् १८६४ के लगभग आबपाशीकेकामकी ओरइनका ध्यान विशेष आकर्षित हुआ। इन्होंने आबपाशीके कामके लिएराज्यकी ओरसे कुँएँ और तालाब आदि खुदवानेका काम जारी किया। इन्होंने अपने शासनकालमें लगभग चालीस लाख रुपये आबपाशीके लिए कुंएँ, तालाब आदि खुदवानेमें ख़र्च किये।

मदरसेके ख़र्चके लिए ५०० रुपया माहवार मुक़र्रर था। वह काफ़ी न था। इसलिए मदरसेका ख़र्च बढ़ाया गया और कितने ही और शिक्षक नियुक्त किये गये। मदरसा हाई स्कूल[१] हो गया और बम्बई विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया। देहातोंमें रहनेवाली प्रजाकी शिक्षाकी ओर ध्यान देना भी सरकारका कर्तव्य था। इसलिए हर परगनेके सदर मुक़ाम और बड़े बड़े गावोंमें प्रारम्भिक शिक्षाके लिए स्कूल खोल दिये गये।

प्रजाकी चिकित्साके लिये नगरमें अस्पताल कायम था। महेश्वर, खरगोन, कन्नौज और रामपुरा परगनोंमें

---

(१) यह हाईस्कूल अब प्रयाग-विश्वविद्यालयसे संबद्ध है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी अस्पताल खुल चुके थे। बड़े बड़े गाँवोंमें चिकित्सा के लिए वैद्य रख दिये गये।

नगरकी आरोग्य-रक्षाकी ओर भी होलकर-सरकारने ध्यान दिया और इसके लिए म्युनिसिपेलेटीका महकमा क़ायम किया।

इन्दौरमें रेल न थी। रेलका अभाव इनको बहुत दिनोंसे खटक रहा था। इसलिए इन्होंने खण्डवेसे इन्दौरतक होलकर-स्टेट-रेलवे निकालनेके लिए भारत-सरकारको नफ़ेका आधा हिस्सा लेनेकी शर्तपर, ज़मीन और एक करोड़ रुपया ४½ रुपया सैकड़ा सूदसे कर्ज़ दिया। सन् १८७७ में इन्दौरसे खण्डवेतक रेलकी लाइन खुल गई।

इनकी अमलदारियाँ संयुक्त-प्रान्त, दक्खिन और अन्य प्रदेशोंमें भी थीं। ये अमलदारियाँ राज्यसे बहुत दूर थीं। इसलिए भारत-सरकारने उनके बदलेमें इनको निमावरका सतवास परगना तथा निमाड़का बड़वाहा-परगना, धरगाँव, कसरावद और मण्डलेश्वर दे दिये।

सन् १८७० में महारानी विक्टोरियाके द्वितीय पुत्र ड्यूक आफ एडिनबरा भारत पधारे। तुकोजीरावने उनसे जबलपुरमें भेटकी।

इसी वर्ष इन्होंने व्यापारकी वृद्धिके लिए दस लाख रुपयेकी लागतसे कपड़ा तैयार करनेका एक पुतलीघर खोल दिया। मध्यभारतमें यह पहला ही पुतलीघर था।

सन् १८७२ में सर टी० माधवराव, के० सी० एस० आई०, राजमन्त्रीके पदपर नियत किये गये। इसके पहले

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कोई नियत मन्त्री न था। तुकोजीराव राज्यके सब काम स्वयं देखते थे। सर टी० माधवरावकी नियुक्ति होनेपर भी ये राज्यसम्बन्धी व्यवस्थायें ख़ासकर मालगुजारीकी वसूली और ख़ज़ानेका काम ख़ुद देखते थे। बजट बनाने का काम भी ये स्वयं ही करते थे। सर टी० माधवरावने राज्य की अच्छी व्यवस्था की। प्रजाकी सुविधाके लिए कई जगह दीवानी और फ़ौजदारीकी कचहरियाँ क़ायम की गईं। अपील सुननेके लिए एक सदर कोर्ट क़ायम हुआ।

सन् १८७२ के दिसम्बर महीनेमें भारतके बड़े लाट लार्ड नार्थब्रुक[१] नर्मदाके पुलका बुनियादी पत्थर रखनेके लिए बड़वाहे आये। बड़वाहेमें दर्बार हुआ। इस दर्बार में तुकोजीराव भी शामिल हुए। और भी कितने ही महाराज इस दर्बारमें सम्मिलित हुए थे।

सन् १८७५ के नवम्बर महीनेमें भारतके बड़े लाट नार्थब्रुक इन्दौर पधारे। तुकोजीरावने उनका राजोचित आगत-स्वागत किया।

मार्च, सन् १८७६ में प्रिंस आफ वेल्स[२] इन्दौर पधारे। तुकोजीरावने बड़े जुलूसके साथ प्रिंस आफ वेल्सकी अगमानी ली और उनको अपनी गाड़ीमें बिठाया। जनरल डेली भी साथ थे। जुलूस आगे बढ़ा और प्रिंस आफ वेल्सके ठहरनेके मुक़ाममें पहुंचा। ये प्रिंस आफ वेल्सको पहुँचाकर वापस आये।

---

(१) लार्ड नार्थब्रुक सन् १८७२ से १८७६ तक भारतके बड़े लाट थे।

(२) स्वर्गीय सम्राट् सप्तम एडवर्ड।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन्ध्या समय इन्होंने प्रिंस आफ वेल्सको प्रीति भोज दिया। दूसरे दिन प्रिंस आफ वेल्स इनसे मिलनेके लिए आये। अनन्तर वे आनन्द पूर्वक इन्दौरसे बिदा हुए।

सन् १८७७में महारानी विक्टोरियाके भारत-साम्राज्ञी होनेके जलसेमें शरीक होनेके लिए ये दिल्ली गये। वहाँ इनको भारतसाम्राज्ञीके कौंसलरकी पदवी मिली। उत्सव विशेषमें सम्मिलत होनेके उपलक्षमें इनको एक झण्डा और तमगा भी मिला।

सन् १८७८ के लगभग ३६० वर्गमील ज़मीन इनको अङ्गरेज़-सरकारने दी।

सन् १८८२ में इन्होंने बदरीनारायणकी यात्रा की।

सन् १८८६ की १७वीं जूनको इनका देहान्त हो गया। इनके शव-संस्कारके समय मध्यभारतके एजेण्ट गवर्नर जनरल अपने सहकर्मचारियोंके सहित उपस्थित थे। इन्दौरनगरमें, खान नदीके पश्चिममें, पुलके पास इनकी छतरी बनी है।

तुकोजीराव दीर्घकाय, हृष्ट-पुष्ट और दिव्यस्वरूप थे। ये नित्य प्रातःकाल चार बजे उठते थे। शरीर-कृत्यसे निवृत्त हो कर स्नान करते। अनन्तर पूजा-पाठमें प्रवृत्त होते। ये पार्थिव पूजा करते थे। सूर्योदय होते ही राज्यप्रबन्धके कामोंमें लग जाते थे। ये नित्यका कार्य नियत कर देते थे। कल क्या काम करना होगा इसकी सूचना कर्मचारियोंको नित्य दे दी जाती थी। ये अपूर्व प्रतिभाशाली थे तथा अपने समयके अद्वितीय राजनीतिज्ञ महाराज थे। इनकी स्मरणशक्ति अपूर्व थी। ये विद्वानोंका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजा शिवाजीराव होलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समुचित सम्मान करते थे। ये जिस किसीसे मिलते उसका मन सहज ही अपनी मुट्ठीमें कर लेते थे। इनमें यह एक अपूर्व गुण था। ये स्वार्थत्यागी भी बड़े थे। सन् १८५७ के सिपाही-विद्रोहमें इन्होंने भारत-सरकारको जो सहायता दी थी उसके बदलेमें भारत-सरकारने इनको धार-राज्य, जोकि उस समय सिपाही-विद्रोहके कारण ही ज़ब्त हो गया था, देना चाहा था, किंतु इन्होंने धार-राज्य लेना स्वीकार नहीं किया। यही नहीं, धार-राज्यकी बहाली-के लिए इन्होंने बड़ी बड़ी चेष्टायें की। अन्तमें धार-राज्य वहाँके महाराजको दिला ही दिया। मैसूरकी बहालीके लिए भी इन्होंने प्रयत्न किया था। प्रजाको सुखी बनानेकी ओर ये विशेष ध्यान रखते थे। प्रजा इनके शासनसे बहुत सन्तुष्ट थी। ये गाँवोंमें जाकर रैयतसे ऐसी बातें पूछते और करते जिससे उसकी हृदय-तन्त्रीके सब तार झनझना उठते थे। ये ज़िलोंमें सदा दौरा किया करते और तहसीलोंके काम देखते थे। राज्यको उन्नत बनाना इनका मुख्य लक्ष्य था। प्रजाको शिक्षित बनानेकी ओर भी इनका विशेष ध्यान था। प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा मुफ़्त देना इनकी शिक्षा-विषयक नीति थी। इन्होंने राज्यमें पञ्चायतें क़ायम की थीं और उसको स्वन्याय कहते थे। इन्होंने ही राज्यमें होलकरशाही डाकख़ाने खोले और टकसालका काम जारी किया। इन्दौरमें डाक्टरी-स्कूल कायम करनेका यश इनको ही है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिवाजीराव ।

(सन् १८८६-१९०३)

शिवाजी, अट्ठाईस वर्षकी अवस्थामें, इन्दौरके राजसिंहासनपर विराजमान हुए । राजसिंहासनपर बैठते ही इन्होंने राहदारी-महसूल, जो जगह २ वसूल किया जाता था और जिससे व्यापार की उन्नतिमें बाधा पड़ती थी, उठा दिया। इससे व्यापारकी उत्तरोत्तर उन्नति होने लगी ।

इन्होंने, सन् १८८७ में महारानी विक्टोरियाकी जुबलीके उत्सवमें, सम्मिलित होनेके लिए, यूरोपकी यात्रा की। कुछ दिन फ्रांसमें, बिताकर लंडन पहुंचे। वहाँ महारानी विक्टोरियाने इनका उचित सत्कार किया और जी० सी० एस० आई० की उपाधि दी। लौटते समय ये स्विट्ज़रलैंड और इटली देखते हुए इन्दौर आये।

राज्यमें मोघिया नामक जातिके लोग चोरी-चकारी और डाँकेजनीसे प्रजाको पीड़ित करते थे। सन् १८८८ में इन्होंने मोघियोंको बसने और खेती करनेके लिए ज़मीन, तकावी और अन्य प्रकारकी सुविधायें दीं— उनके लिए झोपड़े बनवा दिये और कुँएँ भी खुदवा दिये। इससे मोघिया जातिने धीरे धीरे अपना दुष्ट कर्म छोड़ दिया और वह कृषिमें प्रवृत्त हो गई।

ताँतिया भील नामक मशहूर डाकू क़रीब ११ वर्षसे रियासतके कितने ही गाँवोंको उजाड़कर प्रजाको पीड़ित

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कर रहा था। उसे इन्होंने गिरफ़ार कराया। ताँतिया-को उचित दंड दिया गया।

म्युनिसिपेलेटीके कामोंकी ओर भी इनका ध्यान कम न था। शहरकी सफ़ाईका इन्होंने अच्छा प्रबन्ध कराया। लोगोंका जल-कष्ट दूर करनेके लिए उन तालाबों को, जहाँसे नलों द्वारा इन्दौरनगरमें पानी आता था, बढ़वाकर गहरे करवा दिये।

इन्होंने सन् १८६१ में अपने पूज्य पिता तुकोजीरावके नामसे होलकर-कालेजकी स्थापना की। मध्यभारतमें सबसे पहला यही कालेज था, जिसमें बी० ए० तककी शिक्षा दी जाती थी।

इस वर्ष नवम्बर महीनेमें भारतके बड़े लाट लार्ड लैंसडौन[१] इन्दौर पधारे। बड़े लाटका स्वागत राजोचित रीतिसे किया गया। बड़े लाटने इनके प्रजा-प्रेम, शिक्षा-प्रचार आदिकी बड़ी ही प्रशंसा की।

इस वर्ष मद्रास प्रान्त, बम्बई प्रान्त तथा अजमेर-मेरवाड़ामें दुर्भिक्षकी प्रबलता थी। इन्होंने दुर्भिक्ष पीड़ितोंकी सहायताके लिए रुपये भेज अपनी उदारता का परिचय दिया।

सन् १८६६ के दिसम्बर महीनेमें भारतके बड़े लाट लार्ड एलगिन[२] इन्दौर पधारे।

---

(१) लार्ड लैंसडौन सन् १८८८ से १८६४ तक भारतके बड़े लाट थे।

(२) लार्ड एलगिनने सन् १८६४ से १८६८ तक भारतके बड़े लाटका पद सुशोभित किया था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सन् १८६६-६७ में भारतके अनेक भागोंमें दुर्भिक्ष पड़ा। इस वर्ष ये अपनी उदारताका विशेष परिचय देकर अगणित लोगोंके धन्यवाद-भाजन बने। दुर्भिक्ष-पीड़ित देशोंके ५०० अनाथ बालकोंको राज्यमें आश्रय तथा उनको उनकी १८ वर्षकी अवस्था पर्य्यन्त शिक्षा देनेकी उदार आज्ञा प्रदान की। इन ५०० अनाथ बालकोंके सिवा दुष्काल-पीड़ित तीन हज़ार व्यक्तियोंको भी आश्रय दिया उनमेंसे कुछ लोगोंको नौकरी दी। शेषको खेती करनेके लिए ज़मीन दी और छै वर्षके लिए ज़मीनका लगान माफ़ कर दिया; मकान बनानेके लिए पचास रुपये और बैलोंकी ख़रीदके लिए हल पीछे सौ रुपये दिये। हज़ारों रुपयेका गल्ला, पूना, बुंदेलखंड, बघेलखंड, अहमदाबाद और सोलापुर दीन-दुखियोंको बाँटनेके लिए भेजा और गुज़रातसे कई हज़ार गायें, जो बिना घास और पानीके मर रही थीं, ख़रीद कर उनकी प्राण-रक्षा की।

सन् १६०३ में सम्राट् सप्तम एडवर्डके राज्याभिषेकका दरबार दिल्लीमें हुआ। इस दरबारमें सम्मिलित होनेके लिए ये भी तीसरी और चौथी महारानियोंके साथ दिल्ली पधारे और दर्बारमें बड़े समारोहके साथ सम्मिलित हुए। वहाँ कुछ दिनोंके बाद इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। इससे ये इन्दौर वापस आये। इसके अनन्तर जल्दी ही अर्थात् ३१ जनवरी १६०३ ईसवीको, इन्होंने राजपाटसे हाथ खींच लिया; अपने सुयोग्य पुत्र तुकोजीराव (तृतीय) को मसनद पर बिठाया। राजपाट-से सम्बन्ध छोड़ते समय इन्होंने एक सारगर्भित वक्तृता दी थी। वक्तृताका सारांश नीचे दिया जाता है :—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

"राज्यसम्बन्धी कामोंकी देखरेखमें अब मुझे कठिनता पड़ती है। इसलिए मैं राजपाटसे हाथ खींचता हूँ और युवराज तुकोजीरावको राजसिंहासन पर बिठाता हूँ। मुझे आशा है कि बालासाहब (युवराज) के निरीक्षक उन्हें समुचित शिक्षा देनेमें कोई बात उठा न रक्खेंगे, जिससे वे प्राप्तवयमें योग्य शासक, प्रजाके प्यारे और भारत-सरकारके कृपापात्र बन सकें। इस समय उनकी शिक्षाका प्रबन्ध सन्तोषजनक है। किन्तु मेरी इच्छा है कि उनकी धार्मिक तथा नैतिक शिक्षाकी ओर विशेष ध्यान दिया जाय। बालासाहबको मैं यही शिक्षा देता हूँ कि अङ्गरेज़-सरकारके प्रति सदा भक्ति रखना, अपने धर्म, देश और वंशके अनुकूल वैवाहिक सम्बन्ध जोड़ना और अन्य रस्में जारी रखना तथा विशेष मनोयोगपूर्वक शिक्षा ग्रहण कर राज्यशासनके योग्य बनना। मुझे विश्वास है कि भारत-सरकार राज्यके अधिकारों और हक़ोंकी रक्षा करेगी तथा पहलेके सन्धिपत्रों और शर्तोंको क़ायम रक्खेगी।"

इन्होंने अपनी निम्नलिखित इच्छायें भी इस अवसर पर प्रकटकी थीं—

(१) राज्यमें अहल्याबाईकी यादगारमें जो धार्मिक संस्थायें हैं वे उसी प्रकार क़ायम रक्खी जायँ।

(२) परगने या ज़िले किसी एक आदमीको इज़ारेपर न दिये जायँ।

(३) राज्यके सभी कर्मचारियोंके, ख़ासकर उनके जोकि इस राज्यकी प्यारी प्रजा है, हक़ोंपर पूरा ध्यान

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रक्खा जाय और यथासम्भव राज्यकी प्रजाको ही नौकरी दी जाय।

(४) कम तनख़्वाह पानेवाले ऐसे नौकरोंकी, जिनको हालमें तरक्की नहीं मिली है, कुछ तनख्वाह बढ़ा दी जाय।

(५) इस समय राज्यकी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी है और खज़ानेमें काफ़ी रुपया है। आशा है राज्यको कर्ज़ काढ़नेका मौका न आयेगा।

शिवाजीरावके उपर्युक्त भाषणमें उनके अनेक उदार विचारोंके भाव झलकते हैं।

ये राजपाट छोड़नेके अनन्तर बड़वाहेके महलमें रहने लगे। अनन्तर इन्होंने भारतके विविध प्रान्तोंमें भ्रमण किया और लोगों को दान दिया।

१३ अक्टूबर-सन् १९०८ को बड़वाहेमें इनका देहावसान हुआ।

शिवाजीरावका शरीर अच्छा ऊँचा-पूरा, सुडौल और सुहावना था। ये परोपकारी और स्वतन्त्रता-प्रिय थे। इनकी हिम्मतका पार न था। ये मुश्किलों को कुछ समझते न थे। सत्यसे इनका विशेष प्रेम था। जिसपर ये अप्रसन्न हो जाते थे उसे दण्ड भी देते थे और पीछे कृपा भी करते थे।[१] इनको हिन्दी, उर्दू,

---

(१) जैसा तुलसीदासकृत रामायणमें लिखा है—

सासति करि पुनि करहिं पसाऊ।
नाथ बड़न कर यही सुभाऊ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मराठी, संस्कृत तथा अङ्गरेज़ोका अच्छा ज्ञान था। इनकी स्मरणशक्ति अचरज पैदा करनेवाली थी। संसारका इतिहास इनको याद था। एक बार जिसे देख लेते उसे कभी भूलते न थे। शिक्षा प्रचारके ये बड़ेही उदार प्रेमी थे। होलकर-कालेज इसका उत्कृष्ट दृष्टान्त है। पहले अस्पताल नगरसे बहुत दूर था। इन्होंने, लोगों-की सुविधाके लिए नई इमारतमें अपने पिताके नामपर शहरके बीच अस्पताल खोला। इनको इमारतें बनवाने का बड़ा शौक़ था। नयामहल, लालबाग़महल, इन्दौरका हवाबङ्गला, सुखनिवासमहल, बड़वाहेका दरियावमहल, नर्मदामहल, दर्बार-आफिस (नया मोती बङ्गला) होलकर-कालेज, रालामडएलकी पहाड़ी का भवन, तुकोजीराव-अस्पताल आदि इनके ही बनवाये हैं। फ़ौजके लिए भी इन्होंने कितनी ही इमारतें खड़ी कराई थीं। इनको घोड़ोंका भी बड़ा शौक़ था। इनके अस्तबलमें बहुत अच्छे अच्छे घोड़े थे। इनकी दानवीरता प्रसिद्ध थी। ये तीर्थोंमें साधुओंको कम्बल और पात्र बाँटा करते थे। ये अच्छे शिकारी थे। इनका निशाना ख़ाली न जाता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त महाराजाधिराज राजराजेश्वर सवाई तुकोजीराव (तृतीय) होलकर।

वर्तमान महाराज श्रीमंत महाराजाधिराजराजराजेश्वर सवाई तुकोजीराव होलकरका शुभ जन्म सन् १८९० के नवम्बर महीनेमें २६ वीं तारीख़ को हुआ था। श्रीमन्तका विवाह मार्च, १८९४में हो गया था। जिस समय महाराजा शिवाजीरावने राज-काजसे हाथ खींच श्रीमन्तको गद्दी-पर बिठाया उस समय श्रीमन्तकी अवस्था केवल १२ वर्ष की थी। इसलिए उस कौंसिलको, जो महाराजा शिवाजी-रावके शासन-समयमें थी और जिसके प्रधान मशीरुद्दौला रायबहादुर नानकचन्द्जी[1], कारबारी थे, राजप्रबन्धका काम सँभालना पड़ा।

जुलाई, सन् १९०४ में श्रीमन्त मेयोकालेजमें शिक्षा ग्रहण करनेके लिए अजमेर गये। इसके पहले श्रीमन्तने सिटी हाई स्कूल और डेली कालेजमें शिक्षा पाई थी।

१५ नवम्बर, १९०५ ईसवीको प्रिन्स और प्रिंसेस आफ वेल्स[2] इन्दौर पधारे। श्रीमन्तने उनका राजोचित स्वागत किया। प्रिंस आफ वेल्सने, किङ्ग एडवर्ड हाल (टाउन हाल) नामक भव्य भवनको, जोकि सम्राट् सप्तम

---

(१) आप मशीरुद्दौला रायबहादुर मुंशी उम्मेदसिंह-जीके जिनका उल्लेख पहले हो चुका है, सुपुत्र थे। हमें यह लिखते बड़ा शोक होता है कि इस वर्ष आपका देहावसान हो गया।

(२) वर्तमान सम्राट् पञ्चम जार्ज और सम्राज्ञी मेरी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

एडवर्डके अभिषेकोत्सवके स्मरणार्थ बनवाया गया था, स्वयं अपने कर-कमलोंसे खोला। इसी समय श्रीमन्तने प्रिंस आफ वेल्सकी यादगारमें न्यायालय बनवाना स्थिर किया जोकि सन् १६०६ में लगभग पौने तीनलाखकी लागतसे बनकर तैयार हो गया।

सन् १६०८ में श्रीमन्तने मेयोकालेजकी शिक्षा समाप्त कर डिप्लोमा प्राप्त किया। इसी वर्ष सितम्बरकी छठी तारीख़को युवराज यशवन्तरावका शुभ जन्म हुआ।

सन् १६०६ में श्रीमन्त इम्पीरियल केडिट कोरमें शामिल हुए। इसी साल प्रिंसेस मनोरमा का शुभ जन्म हुआ।

अप्रैल, सन् १६१० में श्रीमन्तने, श्रीमन्त महारानी साहब, युवराज और प्रिंसेस मनोरमाके साथ यूरोपकी यात्रा की। नवम्बरमें भारत-सचिव और इङ्गलेण्डके फील्ड-मार्शलसे भेट की। फ़रवरी, सन् १६११ में श्रीमन्तने नीस (इटली) में माण्टेनिग्रोके युवराज, फ़ारिसके राजकुमारों और स्पेनके बादशाहके चचेरे भाईसे भेटकी। मार्चमें, श्रीमन्तने नीससे रोमकी यात्रा की। श्रीमन्तको बिदा करनेके लिए अङ्गरेज़-सरकारके राजदूत स्टेशनपर आये। रोम घूमकर श्रीमन्तने इटलीके बादशाहसे भेट की और वहाँके अनेक नगरोंको देखा। अनन्तर फ़्रांस लौट आये। श्रीमन्त, अप्रैलमें, लण्डन पधारे। मईमें श्रीमन्तने भारत-सम्राट् पञ्चमजार्ज और साम्राज्ञी मेरीसे कई बार भेट की और उनके अभिषेकोत्सवमें भी सम्मिलित हुए।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त अठारह महीने यूरोपमें बिताकर २१ अक्टूबर, १९११ ईसवीको इन्दौर पधारे।

इस लम्बी यात्राके बाद शीघ्रही, अर्थात् ६ नवम्बर, सन् १९११ को श्रीमन्तने राज्यशासनकी डोर अपने हाथमें ली।

इसी वर्ष सम्राट् पञ्चम जार्ज और सम्राज्ञी मेरीके अभिषेकोत्सवका दर्बार दिल्ली में हुआ। सम्राट् सम्राज्ञी-के सहित भारतको अपने शुभागमनसे कृतकृत्यकर इस दर्बारमें सम्मिलित हुए थे। श्रीमन्त भी इस दर्बारमें सम्मिलित हुए।

सन् १९१२ के नवम्बर महीनेमें भारतके बड़े लाट लार्ड हार्डिञ्ज इन्दौर पधारे। श्रीमन्तने बड़े लाटका समुचित सत्कार किया। लालबाग़में श्रीमन्तने बड़े लाट को प्रीति-भोज दिया। इस प्रीति भोजमें बड़े लाटने एक महत्वपूर्ण वक्तृता दे श्रीमन्तके राज्यप्रबन्ध और अनेक कार्योंकी प्रशंसा की तथा होलकर राज्यको अत्यन्त चित्ताकर्षक और उन्नतिशील राज्य बताया।

इसी वर्षके दिसम्बर महीनेमें श्रीमन्तने पुनः यूरोपकी यात्रा की। किन्तु इस बार श्रीमन्त केवल तीन महीने इङ्गलैण्डमें और दो महीने स्काटलैण्डमें बिताकर इन्दौर वापस आ गये।

सन् १९१३ के दिसम्बर महीनेमें श्रीमन्तका द्वितीय विवाह हुआ।

१९१५ के अक्तूबर महीनेमें द्वितीय महारानीसे प्रिंसेस स्नेहलताका जन्म हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

श्रीमन्त एक बड़े ही योग्य और न्यायप्रिय शासक हैं। श्रीमन्तने अपने उदार गुणोंसे प्रजाके हृदय-मन्दिरमें प्रतिष्ठा पा ली है। श्रीमन्तका स्वभाव बहुत उदार और दयापूर्ण है। श्रीमन्तकी शासन-प्रणाली अनुकरणीय और सराहनीय है। श्रीमन्त अपने शासनसे अपनी समस्त प्रजाको सन्तुष्ट और सुखी बनानेके अर्थ यथासम्भव राज्यमें सामयिक प्रकाश फैलानेके लिए उत्कण्ठित रहते हैं। श्रीमन्त शिक्षा-प्रचारके परम प्रेमी हैं। श्रीमन्तने अपनी समस्त प्रजाके हृदयको शिक्षाके आलोकसे आलोकित करनेके लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर दी है। समूचे मध्यभारतमें केवल इन्दौरराज्य के निवासियोंको ही शिक्षा-प्राप्तिका यह श्रेष्ठ साधन और सौभाग्य प्राप्त है। श्रीमन्तने हिन्दू विश्वविद्यालयको पाँच लाख रुपयेकी सहायता देकर अपने शिक्षा प्रेमका उत्कृत परिचय दिया है। ऐसे उदार नरनाथको पाकर इन्दौर राज्यके निवासी धन्य बन रहे हैं।

गत यूरोपीय महायुद्धमें श्रीमन्तने अङ्गरेज़-सरकार-को धन-जन तथा अन्य प्रकारकी सहायता दे साम्राज्यकी रक्षामें उचित भाग लिया था।

ईश्वर करे राजराजेश्वर श्रीमन्त सवाई तुकोजीराव दीर्घजीवी हों तथा उनकी छत्र-छायामें राज्यकी प्रजा खूब फूले-फले और आदर्श महाराजकी आदर्श प्रजा बनकर 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति चरितार्थ करे।

राज्यप्रबन्ध।

वर्तमान महाराज, श्रीमन्त सवाई तुकोजीराव एक कौंसिल और कारबारीकी मददसे राज्यप्रबन्धका कार्य-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सञ्चालन करते हैं। राज्यप्रबन्धके विभागोंका कामकासिल के मेम्बरोंमें बँटा है। मामूली काम चलानेके लिए महाराजने महकमोंके बाला अफ़सरोंको कुछ अधिकार दे रक्खे हैं। महत्वके सब मामले महाराजके समक्ष उपस्थित किये जाते हैं।

मालगुज़ारी।

ख़ालसा-गाँव जागीर

इस पुस्तकके अन्तमें दिये हुए नक़शेसे प्रकट होगा कि इसराज्यका बिस्तार ९,५१९ वर्गमील है और इसमें ४,२९५ गाँव है। गाँव दो तरहके हैं— ख़ालसा और जागीर। ख़ालसा गाँव वह है जिसकी मालगुज़ारी रियाया सरकारको देती है। जागीर-गाँव वह है जिसे होलकर-सरकारने किसी व्यक्तिको उसकी या उसके पूर्वजोंकी ख़िदमतकी एवज़में, या अपने सम्बन्धीको, उसकी प्रतिष्ठा और गुज़ारेके लिए, दिया है और जिसकी मालगुज़ारी रियाया जागीरदारको देती है।

इस्तमरारी

जागीरमें इस्तमरारी या टाँकेवाले गाँव भी शामिल हैं। इस्तमरारी या टाँके-वाले गाँव वह हैं जिनसे कुछ रक़म जागीरदारके ज़रिये सरकारको मिलती है।

गाँवका प्रबन्ध

हर एक गाँवमें एक पटेल होता है। वह गाँवका मुखिया समझा जाता है। गाँवकी जमा वसूलकर सरकारी ख़ज़ानेमें जमा करना उसका काम है। हर एक गाँव पटवारीके सुपुर्द है। पटवारीको फ़सलोंकी हालत हदबस्तके झगड़े, मालगुज़ारीका हिसाब आदि गाँव सम्बन्धी सब विषयोंकी जानकारी होती है। गाँवोंकी रखवालीके लिए चौकीदार हैं।

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

होलकर-राज्यकी ग्राम-संस्था भी अच्छी है। ग्राम-संस्था हिन्दुओंकी बहुत पुरानी और प्यारी वस्तु है। यह कहा जाय कि इसीने हिन्दुओंके अस्तित्वको कायम रक्खा है तो अत्युक्ति न होगी। प्राचीन कालसे ग्रामसंस्थायें जिस प्रकार काम करती आ रही थीं, मुसल्मानों के शासनकालमें भी उसी प्रकार काम करती रहीं। यद्यपि उस समय भारतके शासनमें कितने ही फेरफार हुए, कितने ही नगर लूटपाट और मारकाटसे नेस्तनाबूद हो गये, किन्तु ग्राम-संस्था नहीं बदली, उसपर कुछ विशेष प्रभाव न पड़ा। ग्रामवासी उसी प्रकार खेतीमें लगे रहे; सुतार, कुम्हार, लुहार, चमार आदि उसी प्रकार खेतिहरों को मदद देते रहे। गाँवोंके मुखिया, पटवारी, चौकीदार आदि उसी प्रकार अपना अपना नियत काम करते रहे। प्रत्येक गाँव सब अवयवोंसे पूर्ण एक छोटेसे प्रजातन्त्र राज्यकी तरह था। गाँवोंके मामले मुकद्दमे यहीं पञ्चायतों में पट जाते थे। महाराज तुकोजीराव होलकर (द्वितीय) पञ्चायतके बड़े पक्षपाती थे। वे पञ्चायतको स्वन्याय कहते थे। होलकर-राज्यमें पञ्चायत की प्रथा अब भी है। सरकारने ग्राम पञ्चायतोंको कुछ अधिकार दे रक्खे हैं। ग्राम पञ्चायतोंका विशेष सुधार करनेका विचार हो रहा है।

ग्राम-संस्था

यहाँ फ़सलें दो तरहकी होती हैं रबी और ख़रीफ़। ख़रीफ़में अधिकांश ज्वारि, कपास, तिल, बाजरा, मक्का और तुअर (अरहर) होता है। इनमेंसे ज्वारि और कपास की खेती बहुत अधिक होती है। ज्वारि साढ़े छः लाख और कपास लगभग पाँच लाख एकड़ भूमिमें

फ़सलें

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बोया जाता है। लगभग पन्द्रह सौ एकड़ ज़मीनमें ईखकी भी खेती होती है। रबीमें गेहूँ चना और अलसी बहुत अधिक परिमाणमें होते हैं। गेहूँ लगभग चार लाख एकड़ भूमिमें, चना लगभग एक लाख एकड़ भूमिमें और अलसी लगभग साढ़े बाईस हज़ार एकड़ भूमिमें बोई जाती है। अफ़ीम केवल रामपुरा-भानपुरा ज़िला में होती है। यहाँकी रियाया खुशहाल रहती है।

मालगुज़ारीकी आमदनी

मालगुजारीसे ४६ लाखके लगभग आमदनी होती है, जो आसानीसे वसूल हो जाती।

आबपाशी।

राज्यमें, नर्मदा, चम्बल, लिप्रा कालीसिन्ध आदि बड़ी बड़ी नदियाँ बहती हैं। परन्तु उनसे नहरें काटकर आबपाशी नहीं हो सकती। यहाँ कुँए और तालाब आबपाशीका काम देते हैं। आबपाशीके लिए पुराने कुँओं और तलावोंकी, जो यहाँ आबपाशीकी प्रथा जारी करनेवाले महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) होलकर के शासनकालमें बने थे, मरम्मत कराई जाती और नये खुदवाये जाते हैं। आबपाशीसे यहाँकी खेतीको बहुत लाभ पहुँचता है।

प्रयोग-क्षेत्र।

भारत कृषि-प्रधान देश है। यहाँकी प्रजाकी सबसे अधिक संख्या खेतीहीसे गुज़र करती है। परन्तु यहाँ के खेतिहरोंकी दशा वैसी नहीं जैसी कि पश्चात्य देशके कृषकोंकी है। कारण वहाँके कृषक कृषि सम्बन्धी नवीन नवीन वैज्ञानिक आविष्कारोंका उपयोग करते हैं। यहाँके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कृषकोंको उन आविष्कारोंका पता भी नहीं। वे पुरानी लकीरके फ़कीर बने हुए हैं। यह अटल नियम है कि प्रजाकी उन्नतिसे ही देशकी उन्नति होती है। होलकर-सरकार अपनी प्रजाकी उन्नतिके लिए हर एक प्रकारका सुविधा देनेका प्रयत्न करती है। इसीलिए होलकर-राज्य उन्नतिकी ओर बहुत कुछ अग्रसर हो गया है और बराबर होता जा रहा है। कृषकोंकी दशा सुधारनेके लिए, उनको नवीन नवीन वैज्ञानिक आविष्कारोंको दिखानेके लिए, नवीन रीतिसे अच्छी फ़सलें पैदा करनेके लिए, होलकरसरकारने विशेष धन व्यय कर प्रयोग क्षेत्र खोल दिया है। प्रयोग-क्षेत्रके द्वारा यहाँकी कृषिमें बहुत कुछ सुधार होने की आशा है।

सहकारी सभायें।

राज्यके मुख्य मुख्य स्थानोंमें सहकारी सभायें खोल दी गई हैं और कितने ही जगह खोलनेके लिए कृषकोंको उत्साह दिलाया जाता है। खेतिहरोंकी स्थितिका सुधार करना इन सभाओंका उद्देश है। प्रायः ब्योहर खेतिहरों को इतने अधिक ब्याजपर रुपये देते हैं, जिससे उनको ऋणसे उद्धार पाना कठिन हो जाता है। अब यहाँ सहकारी सभाओंके खुल जानेसे लोगोंको सहजहीमें बहुत थोड़े ब्याजपर रुपया मिल जाता है। सहकारी सभाका मेम्बर बननेसे, उसमें क़िश्त २ कर रुपया जमा करनेसे, बचत करनेकी भी आदत होती है।

पशु-चिकित्सालय।

पशु मूक प्राणी हैं। हम अपनी व्यथाके लक्षण वैद्योंसे प्रकट कर सकते हैं। परन्तु वे ऐसा कर नहीं सकते। इस

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कारण सर्व साधारणको उनकी बीमारी ठीक ठीक नहीं मालूम होती और इससे उनकी चिकित्सा करना कठिन हो जाता है। होलकर-सरकारने राज्यमें पशु-चिकित्सालय खोल दिये हैं और उनमें पशुओंके रोग और इलाज जाननेवाले डाक्टर रख दिये हैं। इससे लोगोंको पशुओं की चिकित्सा करानेमें बहुत सुविधा हो गई है।

फ़ौज।

अठारहवीं शताब्दीमें होलकर-राज्य बहुत विस्तृत था। वह ज़माना सुख-शान्तिका नहीं, लड़ाई और मार-काटका था। तथापि उस समय भी होलकर-राज्यमें शान्ति थी। साथ ही राज्यकी वृद्धि भी होती जाती थी। सेना राजा या राज्यकी मुख्य शक्ति होती है। उस समय अर्थात् भारतमें ब्रिटिशसरकारका अधिकार जमनेके पहले, जिस राज्यके पास जितनी ही अधिक और प्रबल सेना होती थी वह राज्य उतना ही अधिक विस्तृत और शक्तिशाली होता था। होलकर-राज्यके संस्थापक सूबेदार मल्हाररावकी फ़ौजमें केवल सवारोंकी तादाद १५ हज़ार थी। देवी अहल्याबाईके राज्य-कालमें फ़ौजकी संख्या ही अधिक न थी बल्कि वह विशेषतया यूरोपियन ढंगसे तैयार की गई थी। महाराजा जसवन्तरावके शासन-समयमें सेनाकी संख्या बहुत ही अधिक थी। पूनेकी लड़ाईमें, जोकि सन् १८०३ में हुई थी, उनकी सेनाकी संख्या १,४४,००० थी। महाराजा जसवन्त-रावने जब हिन्दुस्थानपर चढ़ाईकी थी उस समय उनकी फ़ौजकी तादाद ९२,००० थी। सन् १८१८ की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मन्दसोरकी सन्धिके बाद भारतमें सर्वत्र शान्ति हो जाने-पर होलकर-सरकारने पहलेकी सी बहुत अधिक सेना रखनेकी आवश्यकता नहीं समझी और इसलिए सेनाकी संख्या घटा दी गई। इस समय यहाँ ३ रिसाले, दो पलटनें, दो तोपखाने, ट्रांसपोर्टकोर (२०० गाड़ियां हैं) और १ बैण्ड है। महाराजको अपनी सेनासे बड़ा प्रेम है। हालमें ही श्रीमन्तने सैनिकोंको तरक्कियाँ दी हैं। गत यूरोपियन महासमरमें महाराजने तन-मनधनसे सहायता पहुँचाई थी। महाराजके एसकोर्ट और ट्रांसपोर्ट के अफ़सर, सिपाही, घोड़े और गाड़ियाँ इस महासमरमें शामिल थे। यहाँके सैनिकोंने समराङ्गणमें बड़ी वीरता और साहससे काम किया था। उनमेंसे कितने ही लोगोंको उनकी वीरता और साहसके लिए पदक मिले हैं। सेनानायकोंके नाम महत्वपूर्ण कार्योंके सम्पा-दनसे सरकारी रिपोर्टोंमें प्रसिद्ध किये गये हैं।

पुलिस।

राज्यमें शान्ति स्थापित रखना, धन-जनकी रक्षा करना तथा दुष्टोंको दण्ड दिलाना पुलिसका काम है। हम अन्यत्र यह लिख आये हैं कि इन्दौर राज्य बहुत विस्तृत है; राज्यके सब ज़िले एक सिलसिलेमें नहीं हैं। इस कारण पुलिस-विभागके लिए बहुसंख्यक मनुष्योंकी आवश्यकता होती है। यहाँकी पुलिसका प्रबन्ध बहुत अच्छा है। इस समय यहाँकी पुलिसमें लगभग १६०० कर्मचारी हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

न्यायालय।

न्याय करनेका काम न्यायालयोंमें न्यायाधीश करते हैं। यहाँका सबसे बड़ा न्यायालय हाईकोर्टकी है। इसे अपने अधीन न्यायालयोंकी अपील सुनने और उनका निरीक्षण करनेका अधिकार है। हाईकोर्टकी अपीलपर स्वयं महाराज, एक जुडिशल कमिटीकी सहायतासे, विचार करते हैं। राज्यमें श्रीमन्तकी आज्ञाके बिना कोई नया क़ानून जारी नहीं होता। जो क़ानून महाराज की आज्ञासे पास हो जाता है उसका पालन राज्यके प्रत्येक न्यायालयमें किया जाता है।

म्युनिसिपेलेटी।

राज्यमें सार्वजनिक रक्षा एवं स्वास्थ्य-रक्षाके लिए म्युनिसिपेलेटीका महकमा क़ायम है। म्युनिसिपेलेटी के ख़ास काम, सड़कोंकी सफ़ाई तथा उनको सिंचाना, मैले पानीकी नालियोंको साफ़ कराना, रोशनीका प्रबन्ध करना, जलकलका निरीक्षण करना, प्लेग, हैज़ा आदि संक्रामक रोगोंसे लोगोंको बचानेका प्रबन्ध करना, जन्म-मृत्युका लेखा रखना, नगरकी उन्नति करना, टूटे-फूटे और अस्वास्थ्यकारी घरोंको गिराना, नये मकान बनाने के लिए लोगोंको ज़मीन देना, आवारह घूमनेवाले पशुओं का प्रबन्ध करना, गाड़ी-ताँगोंका इन्तज़ाम करना, म्युनिसिपल सड़कें सुधारना, आदि हैं। म्युनिसिपेलेटी प्लेगके दिनोंमें चूहे नष्ट कराती, प्लेगके रोगियोंको चिकित्साके लिए प्लेग अस्पतालमें ले जाती तथा उनके लिए हर तरह का प्रबन्ध करती, औसत दर्जे के लोगोंके

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिए, आरोग्य स्थानोंमें रहनेकी व्यवस्था करती, लोगों के प्लेगका टीका लगवाती और आरोग्य स्थानोंमें मामूली रोगोंकी चिकित्सा और दवा-दारूका प्रबन्ध कराती है। हैज़ेके दिनोंमें कुँओंको साफ़ और उनके जलको शुद्ध कराने तथा मैले स्थानोंकी सफ़ाईका प्रबन्ध कराती है। अब राज्यके सब बड़े बड़े क़सबों और शहरोंमें म्युनिसिपेलेटियाँ क़ायम हो गई हैं अर्थात् प्रजाको स्थानिक स्वराज्य मिल गया है।

जंगल ।

जङ्गलोंसे लोगोंकी कितनी ही ज़रूरतें पूरी होती हैं। मकान तैयार करनेके लिए बाँस-लकड़ी, जलाऊ लकड़ा तथा चिकित्साके लिए अनेक प्रकारकी ओषधियाँ आदि जङ्गलोंहीसे मिलती हैं। जङ्गलोंका प्रभाव आबहवापर भी पड़ता है। इन्दौर-राज्यके जङ्गलों का विस्तार कोई २,८०० वर्गमील के करीब है। कोई पचास वर्ष पहले ब्रिटिश भारतमें जङ्गलोंकी रक्षाका काम शुरू ही हुआ था, किन्तु होलकर-सरकारको जङ्गलोंकी रक्षाकी आवश्यकता पहलेहीसे विदित थी। महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) के निकाले हुए सरक्युलरोंसे यह बात विदित होती है कि आग और बर्बादीसे जङ्गलोंको बचानेके लिए क्या क्या यत्न करने चाहिए। यहाँके जङ्गलोंमें कितने ही प्रकारके उपयोगी वृक्ष हैं। सागौनकी लकड़ी बहुत होती और उसकी माँग बहुत अधिक रहती है। अञ्जनकी लकड़ी भी क़ीमती होती है। सादरकी लकड़ी बहुत ही बढ़िया होती है। शीशम बहुत कम मिलता है। यहाँकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छोटी पैदावारमें, घास, बाँस, महुवा, रोसा घासका तेल, आबनूसकी पत्तियाँ, लाख, छाल, फल, शहद और मोम आदि होते हैं।

यहाँके जङ्गलोंमें गायोंके चरनेका कोई महसूल नहीं लिया जाता। पेटलावद-परगनेमें घास काटी और गट्ठोंमें बाँधकर रक्खी जाती है। दुष्कालके समय उस घाससे केवल इस राज्यकेही पशुओंकी प्राण-रक्षा नहीं होती वरन् वह दूर दूर की रियासतों और ब्रिटिश प्रान्तोंमें भी भेजी जाती है। यहाँके जङ्गलोंका काम आजकलके वैज्ञानिक सिद्धान्तके अनुसार होता है। यहाँकी कृषि-प्रदर्शिनीमें, जोकि प्रतिवर्ष होती है, जङ्गल की पैदावार भी दिखाई जाती है।

सायर।

राज्यमें राहदारी महसूल महाराजा शिवाजीरावके शासन-कालसे माफ़ है। निकासी महसूल भी यहाँ इनीगिनी चीज़ोंपर ही लिया जाता है। गल्लेपर किसी किस्म का महसूल नहीं। इन कारणोंसे यहाँ व्यापारकी विशेष वृद्धि हुई है। बाहरसे जो चीज़ें यहाँ बहुत अधिक परिमाणमें आती हैं वे ये हैं—चावल, शकर, किराना, तमाकू, ताँबे पीतल लोहे आदिके बर्तन, कपड़ा, यन्त्र और मनिहारीकी चीज़ें। यहाँसे जो चीज़ें बहुत अधिक परिमाण में बाहर जाती हैं, वे ये हैं—बिनौला, कपास, तमाकू और गल्ला। राज्यमें इस समय नीचे लिखे १२१ व्यापारिक कारख़ाने हैं—

कपड़ा तैयार करनेके पुतलीघर	... ३
बिनौले साफ़ करनेके कारख़ाने	... ५८

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रुईकी गाँठ बाँधनेके कारख़ाने		...	१६
आटेकी चक्कियां	...	...	३०
छापाख़ाने	...	...	२
रेशमका कारख़ाना	...	...	१
बिजलीघर	...	...	१
मिस्त्रीख़ाना	...	...	१
मुतफ़र्क़ात्	...	...	६
			१२१

महकमा आबकारी।

मादक द्रव्य सम्बन्धी कार्य महकमा आबकारीके सुपुर्द है। होलकर-सरकारने लोगोंको नशाख़ोरीके नुक़सानोंसे बचानेके लिए मादक द्रव्योंपर कर बढ़ा दिया है। जिस राज्यमें पहले प्रायः सब ज़िलोंमें अफ़ीमकी खेती होती थी वहाँ अब केवल रामपुरा-भानपुरा ज़िलेमें होती है। गांजा सिर्फ़ सनावद-परगनेमें बोया जाता है।

महकमा इञ्जिनियरी।

महाराजके राजसिंहासनासीन होनेके समयसे अब तक महकमा इञ्जिनियरी द्वारा कोई दो करोड़ रुपया ख़र्च हो चुका है। इस बड़ी रक़मके ख़र्चेसे कचहरियाँ, जेल, थाने, टाउनहाल, स्कूल, अस्पताल, डाकबङ्गले, बिलावलीका बड़ा तलाब, छोटे बड़े निवान, सड़कें आदि बनी हैं। इससे राज्यको बड़ा लाभ पहुंचा है और प्रजाको अनेक प्रकारकी सुविधायें प्राप्त हुई हैं। राज्यकी दशा पूर्वापेक्षा विशेष उन्नत हो गई है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ज़िले क़सबे, शहर और मुख्य मुख्य गाँव सड़कोंसे मिला दिये गये हैं। सड़कोंके कारण एक ज़िलेसे दूसरे ज़िलेमें पहुंचना सुगम हो गया है। बातकी बातमें मोटर एक ज़िलेसे दूसरे ज़िलेमें पहुंचा देती है। सड़कोंके बन-जानेसे यहाँके व्यापारकी उन्नतिमें बहुत सहायता पहुंची है। अब व्यापारी हर मौसममें माल एक जगहसे दूसरी जगह आसानीसे ले जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त सड़कें राज्यकी आबादी बढ़ानेका भी कारण मानी जा सकती हैं। सन् १९०१ में राज्यकी आबादी साढ़े आठ लाख थी। सन् १९११ में दो लाखके लगभग आबादी बढ़ गई। सब सड़कोंकी लम्बाई सात सौ मीलके लगभग है। निवानोंसे कृषिको बहुत लाभ पहुंचा और पहुंचता है।

शिक्षा।

शिक्षाका उद्देश्य बहुत पवित्र है। शिक्षासे ही मनुष्य की मानसिक, शारीरिक और नैतिक उन्नति होती है। शिक्षाको सब प्रकारके सुधारोंका साधन कहना चाहिए। होलकर-सरकारकी शिक्षा-विषयक नीति बड़ी ही सराह-नीय और अनुकरणीय है। अपनी सारी प्रजाको शिक्षित बनानेकी ओर होलकर-सरकारका लक्ष है। होलकर-नरेशकी इच्छा है कि उनके राज्यमें कोई गाँव भी पाठ-शालासे खाली न रहे। आदर्श महाराजकी आदर्श अभि-लाषा होनी उचित ही है। प्रजाको शिक्षित बनानेका लक्ष होलकर-राजघरानेमें हालका नहीं, बहुत पुराना है। महाराजा हरिरावके शासन-कालके विवरणमें यह बात बताई जा चुकी है कि मध्यभारतमें सार्वजनिक शिक्षा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

का द्वार सबसे पहले (सन् १८४३ में) होलकर-राज्यने ही खोला था। होलकर-राज्यकी प्रजाको इस बातका गौरव और अभिमान है। महाराजा हरिरावके बाद महाराजा तुकोजीराव (द्वितीय) ने, जो अपने समयके भारतके एक आदर्श महाराज थे, प्रजामें शिक्षाका विशेष प्रचार किया। उनके राज्यकालकी, सन् १८८१-८२ की रिपोर्ट देखनेसे विदित होता है कि उस समय राज्यमें स्कूलों और विद्यार्थियोंकी संख्या निम्न-लिखित थी—

पाठशाला	संख्या	विद्यार्थी
अङ्गरेज़ी-मदरसा	... १	... २६४
एङ्गलो-वर्नाक्युलर-पाठशाला	३	... ६४
संस्कृत-पाठशाला	... १०	... २५३
मकतब	... ७	... २३८
मराठी-पाठशाला	... ८	... ५६२
हिन्दी-पाठशाला	... ७३	... ३,४६७
कन्या-पाठशाला	... ३	... ७६
क़ानून-पाठशाला	... १	... ८
डाकृरी स्कूल	... १	... १०
	१०७	४,६४२

उस समय विशेष विशेष शिक्षाके लिए राज्यसे वज़ीफ़ा भी मिलता था। पाठशालाओंके निरीक्षणके लिए दो इंस्पेक्टर नियुक्त थे। महाराजने अङ्गरेज़ी-मदरसे (वर्तमान सिटी हाई स्कूल) में हिन्दी-उर्दू और मराठी-भाषा-भाषी विद्यार्थियोंकी सुविधाके लिए हिन्दी-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उर्दू और मराठी-विभाग अलग अलग क़ायम किये थे। महाराजा तुकोजीराव शिक्षाके बड़े प्रेमी थे। वे मदरसेमें जाकर बालकोंकी परीक्षा लेते और उनको मिठाई और इनाम बाँटते थे।

महाराजा शिवाजीरावकी भी शिक्षा-विषयक नीति प्रशंसनीय थी। उन्होंने राज्यमें स्कूलोंकी संख्या बढ़ाई और उच्च शिक्षाके लिये एक कालेज, जोकि होलकर कालेजके नामसे प्रसिद्ध है, खोला।

जिस राज्यने मध्यभारतमें सबसे पहले शिक्षाका द्वार खोला उसे मध्यभारतमें सबसे पहले अनिवार्य शिक्षाका द्वार खोलना चाहिए ही था। हमारे वर्तमान महाराज प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर मध्यभारतके अन्य राज्योंके मार्गदर्शक हुए हैं।

होलकर-कालेजमें कोई दो सौ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। इस कालेजमें बी० ए०—बी० एससी० तक पढ़ाई है। सन् १६०५ में इस कालेजके भवनमें प्रिंस आफ वेल्सने महाराजसे वापसी मुलाक़ात की थी।

महाराजा शिवाजीराव हाईस्कूलमें कोई १४०० लड़के शिक्षा पाते हैं वर्तमान महाराज तथा महाराजा शिवाजी-रावने भी इस स्कूलमें शिक्षा ग्रहण की थी। सिटी हाई स्कूलके लिए यह गौरवकी बात है। महाराज स्कूलकी सोशल गैदरिङ्ग, पारितोषिक-वितरण तथा विद्यार्थियोंके सम्बन्धके अन्य कार्योंसे बड़ा अनुराग रखते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वर्नाक्युलर-स्कूलोंके निमित्त अध्यापक तैयार करने के लिए यहाँ एक नार्मल-स्कूल ट्रेनिंग क्लास है। संस्कृत शिक्षाके लिए संस्कृत महाविद्यालय है, जिसमें संस्कृत-साहित्यके सब विषय पढ़ाये जाते हैं। स्त्रियोंकी विशेष शिक्षाके लिए चन्द्रावती महिलाविद्यालय है।

राज्यमें कितने ही प्राइवेट तथा सहायता-प्राप्त स्कूल भी हैं। प्राइवेट स्कूलोंमें रायबहादुर सेठ कल्याणमलका तिलोकचन्द्र जैन हाई स्कूल और रायबहादुर सेठ हुकुम-चन्दका जैन महाविद्यालय मुख्य हैं।

राजकुमारोंकी शिक्षाके लिए यहां डेली-कालेज नाम का एक विद्यालय है। मध्यभारतके राजा-महाराजाओंके दानसे वह चल रहा है। महाराजा होलकरने कालेजके लिए ज़मीन और साढ़े चार लाख रुपया दिया है।

होलकर-सरकारका ध्यान विद्यार्थियोंके स्वास्थ्यकी ओर भी विशेष रहता है। स्वास्थ्य-सुधारके लिए कसरतों और खेल-कूदका प्रबन्ध है। संक्रामक रोगोंसे आक्रान्त विद्यार्थी और मास्टर जबतक आरोग्य न हो जायँ स्कूलोंमें नहीं जाने पाते। कारण, इससे विद्यार्थियोंमें संक्रामक रोग फैलनेका डर रहता है। हमारे उदार-चरित महाराजने विद्यार्थियोंकी नैतिक शिक्षाके लिए भी आज्ञा दे दी है।

अस्पताल।

यहाँ सबसे पुराना अस्पताल, इन्दौर चेरिटेबुल हास्पिटल, जोकि इस समय किङ्ग एडवर्ड हास्पिटलके नामसे प्रसिद्ध है, है। यह सन् १८४८ में क़ायम हुआ था। होलकर-सरकार उसके ख़र्चके लिये ५००) रु० माहवार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

देती थी। सन् १८७८ से इससे एक मेडिकल स्कूल भी जोड़ दिया गया है। इस स्कूलके स्थापित करनेका यश होलकर-सरकारको ही है। इसमें धातृ-शिक्षा भी दी जाती है।

इस समय राज्यमें ४७ अस्पताल हैं; जिनमें महाराजा तुकोजीराव-हास्पिटल और श्रीमन्त महारानी साहबका स्थापित किया हुआ ज़नाना अस्पताल ये दो मुख्य हैं। इन अस्पतालोंमें सर्वसाधारणकी चिकित्सा मुफ्त की जाती है, बल्कि असमर्थोंको भोजन भी दिया जाता है। प्रति वर्ष लगभग तीन लाख आदमियोंका इलाज इन अस्पतालोंमें होता है। हर साल दस हज़ारके लगभग आपरेशन होते हैं।

पहले कुछ वर्षोंसे नगरमें प्लेगका प्रकोप अधिक रहता था। प्लेगके दिनोंमें लोगोंको प्लेगका टीका लगाया जाता तथा प्लेगके रोगियोंकी चिकित्सा विशेष सावधानीके साथ की जाती है। प्लेगके समय, आरोग्य-स्थानोंमें रहनेवालोंके मामूली रोगोंको चिकित्साका वहीं प्रबन्ध कर दिया जाता है।

गत सन् १९१८ में भारत में प्रायः सर्वत्र ही इंल्फुएंजा का भीषण प्रकोप हुआ था। इन्दौर राज्य भी उसके भीषण आक्रमण से बचा न था। पर सरकार की ओर से चिकित्सा का सुचारु, सामयिक और सुविधा-जनक प्रबन्ध होने से मृत्यु-संख्या बहुत ही कम रही।

मेडिकल डिपार्टमेंटके सुपुर्द चेचकका टीका लगाना भी है। चेचकका टीका लगानेके लिए सभी मुख्य मुख्य जगहों में वैक्सीनेटर नियत हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पागलोंकी चिकित्साके लिए पागलख़ाना और कोढ़ियोंकी चिकित्साके लिए कुष्ठ-चिकित्सालय है। राऊ स्टेशनके निकट एक सेनीटोरियम है, जिसमें क्षय आदि रोगोंकी चिकित्सा होती है।

रेल।

होलकर-स्टेट-रेलवे

होलकर-स्टेट-रेलवे, जोकि ८७ मील लम्बी है, खण्डवेसे शुरू होकर इन्दौरमें ख़तम होती है। इन्दौर-राज्यमें इस लाइनकी लम्बाई ६२ मील है। इस लाइनमें राज्यमें निम्न-लिखित स्टेशन हैं:—

(१) सनावद (२) बड़वाहा (३) मुख़्तियारा (४) चोरल (५) कालाकुण्ड (६) पातलपानी (७) मऊ (८) राऊ और (९) इन्दौर।

इन्दौरके आगे जो लाइन गई है, उसमें राज्यमें निम्न-लिखित स्टेशन हैं:—

(१०) पालिया (११) अजनोद (१२) फ़तिहाबाद (१३) चम्बल (१४) थरोद और (१५) पीपलिया।

यह लाइन राज्यमें ३० मील गई है।

उज्जैन-भूपाल रेलवे

जी० आई० पी० रेलवेकी उज्जैन-भूपाल-रेलवेमें राज्यके भीतर (१६) तराना-रोड नामका केवल एक स्टेशन है। राज्यमें इस लाइनकी लम्बाई १० मील है।

गोद्रा-रतलाम-रेलवे

बी० बी० ऐण्ड सी० आई० रेलवेकी गोद्रा-रतलाम-रेलवे राज्यमें ६ मील गई है और इस लाइनमें इस राज्य के भीतर (१७) बामनिया नाम का केवल एक स्टेशन है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नागदा-मथुरा-रेलवे महीदपुर और रामपुरा-भानपुरा जिला होकर गई हैं। राज्यमें इस लाइनकी लम्बाई २२ मील है। इस लाइनमें इस राज्यमें नीचे लिखे स्टेशन हैं—

नागदा-मथुरा-रेलवे

(१८) महीदपुर-रोड (१९) शामगढ़ और (२०) गरोठ।

डाक और तार घर।

सन् १९०८ तक डाकखानोंका इन्तज़ाम राज्यने अपने ही हाथ रक्खा था। किन्तु सेविङ्ग बैङ्क, बीमा, मनीआर्डर, वेल्यूपेएबल पार्सल आदि करनेकी सहूलियत न थी। इन बातोंका प्रबन्ध होना बहुत आवश्यक था। इसलिए होलकर शाहीडाकखाने अङ्गरेज़ी डाकखानोंसे सम्मिलित कर दिये गये। इस समय राज्यमें ८९ डाकघर और १० तारघर हैं। और कितनी ही मुख्य मुख्य जगहोंमें होलकर-सरकारने तारघर खोलवानेकी आज्ञा दी है। राज्यके भीतर सरकारी डाकमें होलकर-शाही टिकट, जिनमें वर्तमान महाराजका चित्र रहता है, काममें लाये जाते हैं।

टेलीफोन।

ज़रूरी कामोंके शीघ्र-सम्पादनके लिये नगरकी कचहरियों, मुख्य मुख्य स्थानों और प्रधान प्रधान व्यक्तियोंके घरोंमें टेलीफ़ोनके तार लगे हैं।

बिजलीकी रोशनी।

नगरमें बिजलीकी रोशनीका प्रबंध है।

आय-व्यय।

आय

राज्यकी आमदनी एक करोड़से कुछ अधिक है। आमदनी की ख़ास ख़ास रक़में ये हैं :—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मालगुज़ारीसे ४६ लाख, आबकारीसे ११॥ लाख, सायरसे ६ लाख, जङ्गलसे ६ लाख, स्टाम्पसे ३॥ लाख, ब्याजसे १० लाख, अङ्गरेज़सरकारसे नमकके राहदारी महसूलके एवज़में ६१ हज़ार, राजा साहब नरसिंहगढ़से कर ८५ हज़ार सालिमशाही (५८५७७=), कलदार), राजा साहब परतापगढ़से कर ७५ हज़ार सालिमशाही, किशोरीपाटन (बूँदी) से कर ३० हज़ार हाली।

व्यय

ख़र्च ८८ लाखके लगभग होता है। ख़र्चकी ख़ास ख़ास रक़में ये हैं:—

शिक्षा-विभागमें ५ लाख, अस्पतालोंमें २ लाख, म्युनिसिपेलेटीमें १ लाख, पैलेस (शागिर्द-पेशा, हाउस-होल्ड, बग्गीख़ाना, हुज़ूर हाथ ख़र्च आदि) में १३ लाख, मालगुज़ारीकी वसूलीके प्रबन्धमें १० लाख, आबकारी और सायरके महकमोंमें २ लाख, जङ्गल-के महकमोंमें २॥ लाख, नेमनुकोंमें २ लाख, शासन-प्रबन्धमें ३॥ लाख, न्यायालय २॥ लाख, पुलिस और फ़ायरब्रिगेडमें ४॥। लाख, इञ्जिनियरीमें १४ लाख, फ़ौजमें १२ लाख, धार्मिक संस्थाओंमें ३ लाख (जागीर आदि अलावा) और पेंशन तथा इनाम में २ लाख।

प्रजाका कर्तव्य।

राजा और प्रजामें पिता पुत्रकासा सम्बन्ध है। प्रजा-की रक्षा करना, उसका पालन करना, उसको सुखी बनानेका प्रबन्ध करना आदि राजाका धर्म है। राजाकी आज्ञाओंका भक्तिभावसे पालन करना, उसके सुप्रबन्धों-से लाभ उठाना, उसके शासनमें समुचित सहायता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहुँचाना, प्रजाका धर्म है। हमारे वर्तमान महाराज श्रीमन्त सवाई तुकोजीराव होलकर उत्तम रीतिसे राजधर्मका पालन कर रहे हैं। प्रजाकी उन्नति और सुखके लिए श्रीमन्त निरन्तर यत्नवान् रहते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क कर देना, प्रजाको स्थानिक स्वराज्य देना, सहकारी सभायें खोलना, व्यापारकी वृद्धि के लिए सुविधा करना, प्रयोग-क्षेत्र खोलना, कृषि-सुधारका प्रबन्ध करना, जगह जगह अस्तपताल, पशु-चिकित्सालय आदि क़ायम करना, डाकघर, तारघर, रेल आदिका समुचित प्रबन्ध कराना आदि हमारे इस कथनके पुष्टिकारक उदाहरण हैं। प्रजाका कर्तव्य है कि वह श्रीमन्तके सुप्रबन्धोंसे लाभ उठावे और ईश्वरसे श्रीमन्तके दीर्घजीवनके लिए प्रार्थना करे।

॥ इति ॥

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इन्दौरराज्यकी आबादी तथा गांव, कसबा और शहर का नकशा

नं०	परगना	विस्तार, वर्ग मील	आबादी	आबादी पुरुष	आबादी स्त्री	गांव कसबा और शहर
	१—इन्दौर ज़िला	१,५७७	२,७४,७०९	१,४५,१६४	१२९,५४५	७३४
१	(१) इन्दौर परगना ...	...	४७,८३६	२४,६९३	२३,१४३	१५०
	इन्दौर नगर* ...	८·२८	४३,९४७	२४,७९२	२०,१५५	१
	इन्दौर छावनी ...	१·३५	९,१९५	५,३६२	३,८३३	१
२	(२) मऊ परगना ...	...	३४,४३६	१७,८९६	१६,५४०	१०४
	मऊ छावनी ...	५·३५	२९,८२०	१७,७२३	१२,०९७	१
३	(३) देपालपुर ...	...	५४,५१५	२७,१६२	२७,३५३	१७२
४	(४) सांवेर ...	...	३९,८८२	२०,२९१	१९,५९१	१९६
	(५) पेटलावाद ...	...	९,४७१	४,७४५	४,७३०	४०
५	जङ्गल इन्दौर ज़िला ...	...	४,६०३	२,५००	२,१०३	६६

*हालमें इन्दौर नगरकी मनुष्य गणना कराई गई थी। इस गणनामें आबादी ७५,००० पाई गई है।

नं०	परगना	विस्तार, वर्गमील	आबादी	आबादी पुरुष	आबादी स्त्री	गांव कसबा और शहर
	२—महीदपुर ज़िला	८७७	१,३९,१६०	७१,८८८	६७,२७२	४७३,
६	(१) महीदपुर ...	...	५६,१०६	३०,६०२	२८,५०४	२३१
७	(२) तराना ...	...	५६,१६२	३०,५७४	२८,५८८	२०४
८	(३) सुन्दरसी ...	...	५, १३३	२,६४५	२,४८८	१३
९	(४) आलमपुर	...	१५,७५६	८,०६७	७,६९२	२५
	३—निमावर ज़िला	१,०६५	९५,२४३	४८,१२१	४७,११२२	४२१
१०	(१) खातेगांव ...	...	३३,४२२	१६,८५५	१६,५६७	१३८
११	(२) कन्नोद ...	...	२७,४२२	१३,७७४	१३,६४८	११८
१२	(३) काटाफोड़ा ...	...	३३,३८५	१६,९२८	१६,४५७	१३५
	जङ्गल निमावर ज़िला ...	...	१,०१४	५६४	४५०	३०
	४—निमाड़ ज़िला	३,८७१	३,५०,९२४	१,७८,९०६	१,७२,०१८	१,३७३
१३	(१) चिखलदा ...	...	४१,७०७	२०,७७१	२०,९३६	१८१

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

१४	(२) महेश्वर ...	...	४१,०५४	२०७४४	२०,३१०	१७४
१५	(३) बड़वाहा ...	...	५०,३०५	२६,१२६	२४,१७८	२२६
१६	(४) ब्राह्मनगाँव ...	...	४०,०८१	२०,१८४	१९,८९७	१६४
१७	(५) कसराबद ...	...	३४,९३७	१७,७२६	१७,२११	१९२
१८	(६) खरगोन ...	...	५८,४४३	२९,३१५	२९,१२८	२७६
१९	(७) सेंधवा ...	...	३२,६३५	१६,८७६	१५,७५९	१३२
२०	(८) भीकनगाँव ...	...	५०,५७२	२६,५३५	२४,०३७	२५०
	जङ्गल	...	१,१९०	६२९	५६१	६८
	५—रामपुरा भानपुरा ज़िला	२,१२९	१,९२,५२१	९९,३५८	९३,१६३	९९१
२१	(१) नन्दवाई ...	३७	३,२९५	१,६८०	१,६१५	३१
२२	(२) मनासा ...	...	३५,६५२	१८,३४८	१७,३०४	१८६
२३	(३) रामपुरा ...	...	२३,१८७	११,७०२	११,४८५	१५०
२४	(४) भानपुरा ...	...	२२,२५३	११,३८३	१०,८७०	९०
२५	(५) गरोठ ...	...	४०,७६५	२१,०२१	१९,७४४	२१२

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नं०	परगना		विस्तार, वर्गमील	आबादी	आबादी		गाँव क़सबा और शहर
					पुरुष	स्त्री	
२६	(६) सुनेल	...	...	२२,६५४	११, ६७७	१०,६६७	७८
२७	(७) जीरापुर	...	...	४४,५२६	२३,४४५	२१,०८४	२१५
	जङ्गल	...		१६६	१०२	६४	६२
	जोड़	...	९,५११	१०,५२,५५७	५,४३,४३७	५०,९,१२०	४,२९५

नोट—जिस समय सन् १६११ में मनुष्य-गणना हो रही थी उस समय इन्दौरनगर और सनावद् में बड़े ज़ोर का प्लेग था। प्लेगके कारण उस समय इन्दौरनगरकी जनसंख्या ४४,६४७ और सनावद की ३,४२६ ही निकली। प्लेग शान्त होनेपर जुलाई महीनेमें पुनः गणना कराई गई उस गणनाके अनुसार इन्दौरनगरकी आबादी ६८,७३३ और सनावदकी ५,५६५ ठहरी अर्थात् २५,६५५ मनुष्य बढ़ गये। यदि पहलेकी मनुष्य गणनाकी संख्या में २५,६५५ की यह संख्या तथा उस ज़मीन की आबादी (५६२) जिसे होलकर-सरकारने रेलवेके लिए दी है यदि जोड़ी जाय तो राज्यकी आबादी १०,७६,०७४ अर्थात् १०,८०,००० होती है।